।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13

दयानन्दाब्द १६०,
शक सं. १६३५,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११४

वर्ष-12 | अंक-05 | ज्येष्ठ शु. 7 से आषढ़ कृ. 8 सं. 2070 वि. / 16 से 30 जून 2013 / अमरोहा, उ.प्र. | पृ.-12 | प्रति- 5/-

स्वामी कर्मवीर जी के सानिध्य में यज्ञ योग का शंखनाद

सुमन कुमार 'वैदिक'
ग्रेटर नोएडा (9456274350)

आर्यसमाज ग्रेटर नोएडा द्वारा १९ मई को साप्ताहिक या बीटा II[nd] में थाने के निकट पार्क में किया गया। यज्ञ पवित्रा द्वारा सम्पन्न कराया गया। जन विकास मंच ग्रेटर नोएडा द्वारा इस स्थल पर २६ मई से २ जून तक महर्षि पतंजली अन्तर्राष्ट्रीय योगपीठ के संस्थापक स्वामी कर्मवीर जी महाराज के योग शिविर का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर स्वामी कर्मवीर जी ने कहा कि योग शिविर के आयोजन का उद्देश्य है कि हमें शारीरिक आरोग्य प्राप्त हों तथा परिवारों में शान्ति हो। योग सम्पूर्ण विकास का नाम है। योग यम नियम से समाधि तक पहुंचाने का माध्यम है। मानव योनि श्रेष्टतम है जिसमें मानव सोच विचार कर कार्य करता है। यदि संसार ने महर्षि पतञ्जली के विचारों को स्वीकार कर लिया होता तो समस्यायें नहीं होती। महर्षि पतञ्जली ने १९५ सूत्र लिखे। जिसका एक सूत्र का पालन भी मानव जीवन को बदल सकता है। योग को हम आत्म सात करें। परमात्मा का वरदहस्त उन पर होता है जो समाज के लिए जीते है और इतिहास में अमर हो जाते है। अहिंसा में प्रतिष्ठित व्यक्ति के वैर भाव दूर हो जाते हैं। वेद के अनुसार नहीं चलेंगे तो जीवन नैतिक नहीं बनेगा। इस अवसर पर सांसद एवं फिल्म कलाकार राजबब्बर ने कहा हमारी परमम्परा जीयो और जीने दो की है। इस अवसर पर अजीत सिंह दौला, राजीव नागर, संजीव वैसला मांगेराम आर्य, विजेन्द्र सिंह सहित काफी श्रद्धालु रहें। कार्यक्रम के बाद भोजन की व्यवस्था थी।

स्वामी कर्मवीर जी का स्वागत करते हुए अजित दौला, नरेन्द्र नागर व अन्य -केसरी

योग के प्रसारक हैं समाजसेवी सुरेश नागर

सुमन कुमार 'वैदिक'

जनसेवा मिशन नोएडा के संस्थापक एवं पूर्व प्रधानाचार्य सुरेश नागर स्वामी कर्मवीर जी के प्राणायाम एवं निशुल्क चिकित्सा शिविर में सदैव योगदान देते हैं। इनके द्वारा पूर्व में अमरोहा, गढ़मुक्तेश्वर, धनौरा में लगे शिविरों का आयोजन कराया गया। ग्रेटर नोएडा के शिविर में सहयोग दिया तथा भविष्य में स्वामी जी के हर कार्य में सहयोग देने का भी आश्वासन

समाजिक कार्यों में सबसे आगे कंवर सिंह तंवर

सुमन कुमार 'वैदिक'

समाज के प्रत्येक कार्य में सहयोग देने वाले प्रमुख समाजसेवी कंवर सिंह तंवर स्वामी कर्मवीर जी महाराज के योग एवं शिक्षा के मिशन में भी पूर्ण सहयोग करते हैं।

ग्रेटर नोएडा के योग विज्ञान शिविर में उपस्थित होकर इन्होंने भविष्य में हर प्रकार के सहयोग देने का आश्वासन दिया।

आत्मिक आनंद का साधन योग : कर्मवीर

सुमन कुमार 'वैदिक'
ग्रेटर नोएडा

योग क्या है इस प्रश्न का सीधा सरल उत्तर यह है कि शरीर स्वस्थ मन शान्त रखने एवं आत्मिक आनन्द प्राप्ति का एक मात्र साधन योग है।

यह योग ही संसार सागर से मुक्ति दिलाने वाली एक युक्ति विशेष है। आदिकाल से लेकर आज तक मुमुक्षु जय, तप, स्वाध्याप और ईश्वर प्राणिधान रूप क्रिया योग के द्वारा शरीर से स्वस्थ, मन से शान्त रहते हुए आत्म साक्षात्कार करते आ रहे हैं। भविष्य में भी इन तीनों साधनों का आचरण करने वाले सुखी शान्त एवं आनन्दित रहेंगे। यह जन विकास मंच द्वारा आयोजित योग विज्ञान शिविर में २६ मई से २ जून तक आयोजित योग गुरु स्वामी कर्मवीर जी महाराज ने कहा सही शिक्षा व चिकित्सा के द्वारा मानव कल्याण होगा।

संस्कार समाज का निर्माण ही भारत को मजबूत बनायेगा। स्वामी कर्मवीर जी महाराज ने शव आसन, वज्र आसन, हल आसन, गौ मेघ, बजदूत हस्तोतातसन सहित अनेक आसन अर्थराईटिस, घुटने का दर्द, सर्वाइकिल पीठ दर्द, थाईरायड आदि बीमारियां दूर हो सकती हैं। स्वामी जी ने कुछ जड़ी बूटियों की भी जानकारी दी, जिसमें भूमि आंवला, पुर्ननवा, अमरबेल। जिनसे पीलिया, मधुमेह, संजीवनी (गिलोय) से अल्सर, डायरिया, घाव और अमलतास के कब्ज़ गैस, खाज, खुजली, फोड़े फुन्सी व कफ आदि बीमारियों का इलाज गारंटी से हो सकता है। भारी उत्साह के साथ लोग शिविर में भाग ले रहे हैं।

धूमधाम से मनाया गया वार्षिकोत्सव

सतीश आर्य
अलीगढ़।

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बरेली से आये पंडित जितेन्द्र देव ने ईश्वर भक्ति, देशभक्ति के गीतों से सरोबार करते हुए अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल की गाथा सुनाकर भाव विभोर कर दिया। बिजनौर से आये पंडित रुपचन्द्र आर्य ने वीर हकीकतराम का धर्महित बलिदान पर कारुणिक कथा सुनाकर श्रोताओं को करुण रस से सरोवार कर दिया। उन्होंने उदयपुर रियासत में आर्यसमाज की शक्ति का ऐतिहासिक वर्णन करते हुए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानंद की गुप्त राजनीतिक गतिविधियों पर गुटके के बढ़ते हुए प्रचलन पर गीत सुनाकर इस बुराई से बचने का अनुरोध किया। कार्यक्रम में सत्यप्रकाश, रामस्वरुप सिंह राठौर, चन्द्रमोहन सारस्वत, मुंशी खेमकरन, शांतिस्वरुप, राजनारायण शर्मा, वीपी शर्मा, वीर सिंह, डोरीलाल, बाबूदत्त एड., डा. सोवरन सिंह सोलंकी, वीरेन्द्र सिंह, हरीश्याम तिवारी, महेन्द्र सिंह, पूरन सिंह आदि लोग शामिल रहे।

आर्यसमाज में सम्पन्न यज्ञ का भव्य दृश्य- केसरी

जीवन पर स्वामी दयानंद का अत्यधिक प्रभाव : गुणग्राहक

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली।

आर्यसमाज सागरपुर के प्रांगण में आयोजित भव्य समारोह में आर्यजगत के विख्यात भजनोपदेशक सागर कुमार शास्त्री, तथा बच्चू सिंह आर्य ने सुमधुर कंठों से भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुति की।

आर्य जगत के विद्वान आचार्य रामनिवास गुण ग्राहक ने इस अवसर पर महर्षि दयानंद के जीवन संबंधी प्रसंगों की प्रस्तुति करते हुए कहा कि मूलशंकर का जीवन, उनका चिंतन, उनकी हर गतिविधि प्रमाण है कि दयानंद के रुप में उसने जो भी महान कार्य किये उसके बीज उसकी बाल-वृत्ति में ही प्रस्फुटन को आतुर होते हुए देखे जा सकते थे।उनका कहना था कि मनुष्य के जीवन में असत्य चाहें जितना भी छोटा हो, उसे क्लेश-कष्ट ही देगा, कभी सुख लाभ नहीं पहुंचा सकता। हमें कभी भी अपने जीवन में असत्य के प्रति किन्चित भी अनुराग नहीं रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि बोध का महत्व पहचानो, अपने ज्ञान के विरुद्ध आचरण करना अपने ज्ञान का अपमान है। हम दोहरा जीवन जीते है। इसके विपरीत हमारा वास्तविक स्वरुप बड़ा दागदार, दोषपूर्ण होता है। जीवन में उत्साह को न टूटने दो, आत्मबल को दुर्वल न होने दो, जो वेदादि सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय से आता है।

समारोह में मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष पवन मिश्र ने कहा कि गरीबो की सहायता करना हमारे जीवन ध्येय होना चाहिए।

संस्कृति के प्रणेता थे दयानंद : चड्ढा

जेएस दुबे
कोटा।

आर्य समाज विज्ञाननगर द्वारा श्योराज वशिष्ठ के पौरोहित्य में वैदिक मंत्रों के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान दम्पति अनिल दुबे और दिया दुबे थे।

इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना उस समय के भटके हुए समाज को नई दिशा प्रदान करने के लिए की थी। उन्होंने समाज में फैली कुरितियों औ आपस में वैमनस्य की भावना को समाप्त करने और आध्यात्म के परिवेश में आधुनिक समाज का निर्माण करने का प्रयत्न किया था। डा. केएल दिवाकर ने बच्चों को अच्छा संस्कार देने की बात कही। जेएस दुबे ने प्रभु भक्ति का गीत ' सौ बार जनम लेंगे, सौ बार फना होंगे, एहसान दयानंद के फिर भी न अता होंगे............ सुनाकर मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रसाद वितरण और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

आर्य सम्मेलन भव्यता से संपन्न

गुड़गांव, (सोमनाथ आर्य)। आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय में समारोह का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रुप में हरियाणा कि खेल, सहकारिता एवं कृषि मंत्री सुखवीर कटारिया रहे। समारोह का शुभारम्भ पवित्र वेद मंत्रों द्वारा किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा युवा विद्वान आचार्य अरविन्द तथा युवा पुरोहित पण्डित शिवदत्त शास्त्री थे।

यजमानों को संबोधित करते हुए अपने उद्बोधन में आचार्य अरविन्द ने सभी आर्यजनों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर शिवदत्त आर्य ने चिकित्सालय का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि गत 43 वर्षो से निस्वार्थ जनता की सेवा में समर्पित भाव से संलग्न है। जहां प्रतिदिन 70-80 रोगी एलोपैथिक इलाज कराते हैं। 100 से अधिक नेत्र रोगी आते हैं। वर्ष में 700 से अधिक आखों के लैंसयुक्त आप्रेशन किये जाते हैं। इस अवसर पर यशपाल कामरा, सुधान्शु मल्हौत्रा, विनय मेहता, लक्ष्मी देवी आदि शामिल रहे।

निकाली यज्ञ यात्रा

फर्रुखाबाद। नवसवंत्सर के स्वागत में महर्षि दयानंद की कर्मस्थली टोका-धार में वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। उसके बाद नगर भर में यज्ञ की भव्य यात्रा निकाली गयी। इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से सभी नगरवासियों को नववर्ष की शुभकामनाएं दी गयीं।

श्रद्धालु महानुभावों ने इस यज्ञयात्रा में सहभागिता के साथ ही वैदिक विद्वानों के उपदेशामृत का भी रसपान किया।

स्वामी परमानंद को श्रद्धांजली

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

आर्यसमाज विज्ञान नगर में हाडोती क्षेत्र के तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी परमानंद को श्रद्धांजली दी। जिलासभा के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा ने कहा कि स्वामी परमानंद ने हाड़ौती सहित उत्तर भारत एवं मध्य प्रदेश क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। अपनी स्थानीय भाषा में भजनों के माध्यम से पाखण्ड , अन्धविश्वास एवं रुढ़ियों के खिलाफ जनजागरण करते रहे। डा. किशोरीलाल दिवाकर ने कहा कि स्वामी परमानंद 95 वर्ष की उम्र में भी पूरे जोश से आर्यसमाज का प्रचार करते रहे। प्रारम्भ में जीप एवं साइकिल पर ग्राम में पचार किया। महर्षि दयानंद वेद प्रचार समिति के प्रधान एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार मंत्री अरविन्द पांडय ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा कि सन्यासियों एवं वानप्रस्थियों की आर्यसमाज में अच्छी व्यवस्था हो जिससे वह अपने जीवन के अंतिम समय साधना से गुजार सकें। जिला सभा के मंत्री कैलाश बाहेती ने बताया कि स्वामी परमानंद के अन्त्येष्टि संस्कार में प्रधान अर्जुन देव चढ़ा, रामप्रसाद याज्ञिक, बनवारी लाल सिंघल, रामदेव शर्मा, रमेश गोस्वामी सहित बारां पहुंचे।

वहां आर्यसमाज बारां के प्रधान, मंत्री सहित जन महिला पुरुष उपस्थित थे। अन्त्येष्टि संस्कार पण्डित बिरधीचन्द गोस्वामी द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से कराया गया। श्रद्धांजली सभा में जेएस दुबे, मनोहर लाल, महेन्द्र रस्तोगी, दिनेश शर्मा, राकेश चढ़डा आदि उपस्थित रहे।

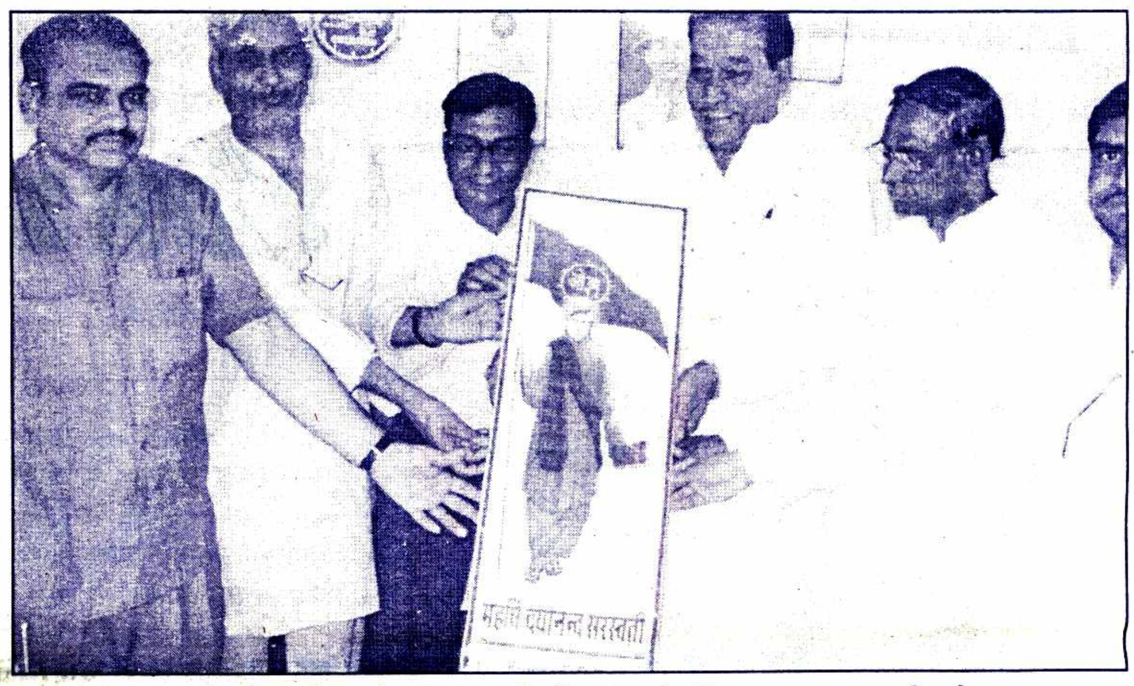

दयानन्द सरस्वती के रंगीन पोस्टर का विमोच करते जिला प्रधान अर्जुन देव चढडा व अन्य -केसरी

विश्व शान्ति एवं मानव कल्याणार्थ यज्ञ

जयपुर (ईश्वर दयाल माथुर)। विश्वशान्ति के एवं कल्याणार्थ यर्जुवेद परायण यज्ञ का आयोजन कराया। वैदिक विधि विधान एवं कर्मकाण्ड के प्रति आकर्षण व श्रद्धा अब पौराणिक जगत एवं सामाजिक संगठनों को भी आकृष्ट करने लगे हैं। इसका ताजा उदाहरण मानसरोवर कालोनी के 'डे केयर सेंटर' में वरिष्ठ जनों की संस्था सीनियर सिटिजन फोरम द्वारा आहूत यजुर्वेद पारायण यज्ञ है। आर्य समाज के संयोजन में विश्व कल्याण हेतु यर्जुवेद पारायण यज्ञ किया गया। कार्यक्रम के संयोजक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल सिंह ने ऋषि के त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला। स्वर माधूरी चारो दिन यादराम, जवाहर लाल, वधवा मेहरा परिवार, सुधा मित्तल तथा सुनील अरोड़ा ने भजन प्रस्तुत किये। सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद के स्थाई कार्यक्रम 'जातिवाद के विरुद्ध जंग' के अन्तर्गत पूर्णाहुति विवाहित आठ जोड़ों का प्रशस्तिपत्र , प्रतीक चिन्ह और माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अनेक आर्यजन मौजूद रहे।

सच्चे शिव की खोज ने मूलशंकर को बनाया दयानन्द : अग्निमित्र

भैरुलाल आर्य
तलवण्डी, कोटा।

आर्य समाज महर्षि दयानंद नगर तलवण्डी में महाशिवरात्रि, महर्षि दयानंद सरस्वती के बोध दिवस के रुप में मनाया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज के वैदिक विद्वान् अग्निमित्र शास्त्री ने सम्बोधित करते हुए कहा कि शिवरात्रि का यह पर्व बालक मूलशंकर के मूलशंकर से स्वामी दयानंद सरस्वती बनने का पर्व है। इसी दिन स्वामी दयानंद के मन में सच्चे शिव को प्राप्त करने की प्रेरणा जागी थी। जिसके परिणामस्वरुप ही आर्यसमाज की स्थापना हुई तथा समाज के अज्ञान अविद्या एवं आडम्बर दूर होना प्रारम्भ हुआ। अर्जुन देव चढडा ने कहा कि महर्षि दयानंद ने समाज में व्याप्त अंधकार को दूर कर ज्ञान का उजाला फैलाया। मूलशंकर के नाम में ही शंकर जुड़ा है, जिसने उन्हें सच्चे शिव परमात्मा को खोजने के लिए प्रेरित किया।

आर्यसमाज की महिला विदुषी रुकमणी देवी द्वारा ऋषि दयानंद द्वारा किये गये कार्यो को भजन "सूरज बन दूर किया जिसने पापो का घोर अन्धेरा वो देव दयानंद मेरा'' इस अवसर पर प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा तैयार किया गया महर्षि दयानंद सरस्वती का पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराते हुए रंगीन पोस्टर का विमोचन प्रतिनिधि सभा प्रधान अर्जुन देव चढडा द्वारा किया गया। इस अवसर पर अग्निमित्र शास्त्री, रामप्रसाद याज्ञिक, श्रीचन्द्र गुप्ता, रघुराज सिंह करणावत, भैरु लाल आर्य, सुमन बाला सक्सैना, योगराज कुमरा सहित सैंकड़ो गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आर्यसमाज का आधार है वेद : विष्णुमित्र

अमित कुमार आर्य
खेड़ा अफगान, सहारनपुर।

आर्य समाज के 115 वें वर्ष पर आयोजित धर्म जागृति महोत्सव में बिजनौर से आए आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने कहा कि आर्य समाज का आधार सनातन ज्ञान वेद है। जो नूतन है न पुरातन है, उसे सनातन कहते हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने किसी नूतन कल्पना को न चलाकर वेद व ऋषि मुनियों के सिद्धान्तों का ही प्रचार-प्रसार किया है।

समस्त ज्ञान व विज्ञान के आदि मूल वेग के अनुसार धर्म संस्कार यज्ञ शिक्षा व सत्यार्थ व वर्णव्यवस्था को जन्म के स्थान पर गुण कर्मानुसार सिद्ध करके आर्यसमाज में प्रचलित कराया। बालक-बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक गुरुकुलों को स्थापित कराकर सबको शिक्षा का अधिकार प्रदान कराया। आधुनिक युग में धर्म के वास्तविक स्वरुप व वेद से संयुक्त होने के लिए आर्यसमाज व महर्षि दयानंद से जुड़ना आवश्यक है। क्योंकि आर्यसमाज का आधार वेद है। आर्यभजनोपदेशक पं. ओमप्रकाश वर्मा ने भजन व गीतों से वैदिक संदेश व आर्य समाज के योगदान की चर्चा की तथा आर्य भजनोपदेशक पं. प्रताप सिंह आर्य ने ईश्वर भक्ति, यज्ञ महिमा संस्कार विषयक भजन व गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

अध्यक्षता आदित्य प्रकाश गुप्त ने व संचालन मंत्री आर्य समाज अमित कुमार आर्य ने किया। प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थीयों को नकद पुरस्कार वैदिक साहित्य व प्रशस्ति पत्र प्रदान किये। इस अवसर पर कुंवरपाल सिंह आर्य, यशपाल गुप्ता, राजेश आर्य मच्छहेडी, राजेश आर्य खेडा, महीपाल , नरेन्द्र कुमार, सतीश कुमार, कुलवंत सिंह, प्रकाश आर्य, छोटा, देवेन्द्र कुमार, अवनीश आर्य, पवन सिंह रावल, प्रियंका आर्य, वेद भूषण गुप्ता, शशिकान्त आदि कार्यकर्ता व गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

पुरस्कार प्राप्त विद्यार्थियों में प्रथम पुरस्कार 2100 + साहित्य + प्रशस्ति पत्र, रीतू देवी, बुल्लेवाला, द्वितीय पुरस्कार 1100 + साहित्य + प्रशस्ति पत्र, रेशू देवी, गंगोह, तृतीय पुरस्कार 500 + साहित्य + प्रशस्ति पत्र, रीतू, श्वेता चौधरी, सोनिया, शिखा देवी, वर्णिका त्यागी, चतुर्थ पुरस्कार 250 + साहित्य + प्रशस्ति पत्र, मैफरोन बानो, कोमल देवी, गायत्री देवी, आरुशी चौधरी, भूरिया देवी, सन्नी कुमार, राम औतारी, मंजुला देवी शामिल रहे।

आर्यावर्त केसरी के मान्य सदस्यों की सेवा में सदस्यता-सहयोग हेतु विनम्र निवेदन

(सम्मानित सदस्य संख्या........................)

मान्यवर महोदय, सादर-सप्रेम नमस्ते!

आशा है, सपरिवार स्वस्थ व सानन्द होंगे। आपकी सेवा में **आर्यावर्त केसरी** निरंतर भेजा जा रहा है- मिल रहा होगा।

हमें विनम्रतापूर्वक यह अनुरोध करना है कि आपकी **सदस्यता सहयोग राशि** माह.......................... में समाप्त हो रही है। कृपया अपना **वार्षिक/द्विवार्षिक/आजीवन** अथवा **संरक्षक सदस्यता सहयोग** क्रमश: **रू० 100/-, 200/-, 1100/-** अथवा **3100/-** स्व सुविधानुसार भेजने का कष्ट करें। सहयोग राशि **धनादेश** के द्वारा अथवा आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा के खाता सं0 **30404724002** अथवा सिंडिकेट बैंक के खाता सं0 **88222200014649** में जमा करा सकते हैं। **कृपया सहयोग राशि जमा करने पर हमारे दूरभाष संख्या-05922-262033 अथवा चलभाष संख्या-08273236003 पर अवश्य सूचना देने का कष्ट करें**। आशा है पूर्व की भांति सदैव सहयोग व सद्भाव बनाए रखेंगे। हार्दिक धन्यवाद के साथ-

डॉ० अशोक कुमार आर्य- सम्पादक, आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) चल. : 09412139333

आर्य साहित्यकार पुरस्कारों की घोषणा

बोहल, हरियाणा (**नरेश सिहाग 'बोहल' एड.**)। गुगनराम सोसायटी ने आर्य समाज में लेखन, प्रकाशन व संपादन को प्रगति देने के उद्देश्य से दो साहित्य पुरस्कारों के लिए डॉ. रमेश दत्त मिश्र(फैजाबाद, उत्तर प्रदेश) के शोध प्रबंध 'महर्षि दयानंद का दार्शनिक चिंतन' को वर्ष 2012 के लिए, वीरेन्द्र कुमार राजपूत की पुस्तक 'यजुर्वेद (चतुर्थ भाग) काव्यार्थ ' को वर्ष 2011 के लिए व लक्ष्मण कुमार शास्त्री (उड़ीसा) की पुस्तक मृत्यु और पुनर्जन्म' (उड़िया भाषा) को वर्ष 2007 के लिए चुना गया है। गिना देवी साहित्य पुरस्कार के लिए ताराचंद आहूजा(जयपुर, राजस्थान) की पुस्तक ' दिव्य जीवन की ओर' को वर्ष 2012 के लिए ओमप्रकाश आर्य(कोटा राजस्थान) की पुस्तक 'आर्यसमाज एक परिचय ' को वर्ष 2010 के लिए व नाथूराम शर्मा (झांसी उत्तर प्रदेश) की पुस्तक 'दिव्य नित्य कर्म विधि' (पद्यानुवाद) को वर्ष 2002 के लिए चुना गया। इन दोनों पुरस्कारों के तहत प्रत्येक लेखक को सोसायटी की तरफ से 1100-1100 रुपये की राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। इसके अतिरिक्त कृपाल सिंह वर्मा (मेरठ उत्तर प्रदेश) की पुस्तक 'वैदिक विज्ञान के सिद्धान्त' व आचार्य चैतन्य मुनि(हिमाचल प्रदेश) की पुस्तक 'राज्य व्यवस्था कैसे हो' को सोसायटी की तरफ से प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

व्यक्ति का कद पद से नहीं कर्मो से निर्धारित : अमरीश

भूपेन्द्र कुमार आर्य
सहारनपुर।

आर्य समाज नकुड़ के साप्ताहिक सत्संग में बोलते हुए आर्यसमाज के प्रधान अमरीश कुमार गोयल ने कहा कि व्यक्ति का कद पद से नहीं, बल्कि उनके कर्मो से निर्धारित होता है।

नम्र व्यवहार महान व्यक्तित्व का सच्चा आभूषण है। मनुष्य के स्वभाव से उसके परिवार के संस्कार का पता चलता है। भारत ज्ञान-विज्ञान के कारण विश्वगुरु रहा है। उसको विश्वगुरु बनाये रखना हमारी जिम्मेदारी है। मनुष्य को सतत साध ना करनी चाहिए जो निज को साध लेता है वह समाज को साथ लेता है। इससे पूर्व साप्ताहिक यज्ञ की सम्पूर्ण प्रक्रिया भूपेन्द्र कुमार ने संपर्क कराई यज्ञमान भूषण कुमार गोयल रहे। इस अवसर पर प्रदीप कुमार, महेन्द्र पाल, सत्यवीर त्यागी, अभय सिंह, डॉ. नन्द किशोर, जतिस कुमार, भूपेन्द्र कुमार, अमरीश कुमार आदि उपस्थित रहे।

वेद ज्ञान ही कर सकता है जीवन में उजाला

प्रदीप कुमार गोयल
नकुड़, सहारनपुर।

वेद ही एक ऐसा मार्ग है जहाँ मनुष्य के जीवन में वर्षो छाया अन्धेरा एक पल में उजाला कर सकता है। आचार्य रणवीर शास्त्री आर्य समाज मंदिर में आयोजित ऋषिबोधोत्सव कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि महाशवरात्रि को आर्य समाज में बोध रात्रि के नाम से जाना जाता है। शिव रात्रि का अर्थ है कल्याण करने वाली रात्रि जहां बोध नहीं होगा, वहां कल्याण नहीं हो सकता।

इस अवसर पर भूपेन्द्र गोयल, प्रधान अमरीश गयोल, अभय सैनी एडवोकेट, चौ. धर्मवीर, धर्मपाल गुप्ता, प्रदीप गोयल, डॉ. मांगे राम, भूषण गोयल, राकेश कुमार, जतिन कुमार त्रिलोक चन्द्र व बड़ी संख्या में महिलाएं भी उपस्थित थीं। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

धूमधाम से हुआ वार्षिकोत्सव

देवपाल आर्य
सरधना/ मेरठ।

आर्यसमाज मंदिर में आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में भजनोपदेश एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये तथा वक्ताओं ने आर्यसमाज के संस्थापक एवं समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला।

समारोह में बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम किये, जिसमें संस्थापक महर्षि दयानंद स्वामी के जीवन से संबंधित गीत गाये गये। समारोह में विद्वान वानप्रस्थ मुनि एवं सहारनपुर से आर्यी संगीता आर्या तथा अलका आर्या (घोड़ी बछेड़ा) के भजनोपदेश हुए। समारोह में अधिक संख्या में आर्यजन शामिल रहे।

विधि-विधान से हुआ यज्ञ

अफजलगढ़ (**सतीश आर्य**)। होलिका पर्व के उपलक्ष में डॉ. अशोक रुस्तौगी के पौरोहित्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। जोगिपुरा, कालागढ़ रोड निवासी ब्रह्मपाल सिंह ने बबलू हकीम के आवास पर यज्ञ के आयोजन में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ की पूर्ण आहुति के उपरान्त उपस्थित श्रद्धालुओं को श्री रस्तौगी ने होलिका दहन का महत्व समझाते हुए कहा कि होलिका दहन भी यज्ञ का ही रुप है। जिसमें बाल, आबाल, वृद्ध, युवक-युवतियां आदि सभी सुगंधित द्रव्यों के साथ घर में बने पकवान भी अग्निदेव को भेंट चढ़ाते हैं और आने वाली फसल के होलकों को अग्नि में भूनकर फसल का स्वागत करते है।

धामपुर से पधारे लीलावत चौहान व फूल सिंह सैनी भी शामिल रहे। इस अवसर पर आर्युवेदिक औषधियां मिश्रित व पूर्णिमा की शीतल तथा स्निग्ध किरणों से सुव्यवस्थित क्षीरिका प्रसाद का वितरण किया गया। यज्ञ में तारा देवी, क्रांति देवी, अमित कुमार, राजेन्द्र सिंह, सुमनलता, पूरन सिंह ध्यानी, आदि शामिल रहे।

विकलांग सेवा संस्थान द्वारा सत्यार्थ कथा सम्पन्न

फर्रुखाबाद। श्रीमद दयानंद सत्यार्थ प्रकाश कथा का आयोजन भारत विकलांग सेवा संस्थान आर्यसमाज मंदिर के तत्वावधान में जसमई रोड पर 10 से 18 अप्रैल तक पं. कड़कदेव योगाचार्य, शास्त्रार्थ महारथी के नेतृत्व में सम्पन्न हुई, जिसमें 101 व्यक्तियों को यज्ञोपवीत धारण कराया गया।

ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य हुए सेवानिवृत्त

दढ़ियाल (अमरोहा)। बेसिक शिक्षा परिषद् में शिक्षक के रूप में सेवारत ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य ने 41 वर्ष 4 माह कि सेवा के उपरान्त अपने पद से सेवानिवृत्त हुए है। श्री आर्य वर्तमान में निकटवर्ती ग्राम खरपड़ी स्थित जू. हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक एवं न्यायपंचायत खरपड़ी में एनपीआरसी के दायित्व का निर्वाहन कर रहे हैं। श्री आर्य शैक्षिक संगठनों के साथ ही आर्यसमाज से भी सक्रिय रूप से जुड़े हैं आप वर्तमान में आर्य समाज दढ़ियाल के मंत्री तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा अमरोहा के उप प्रधान हैं तथा क्षेत्र में विशेष पहचान और प्रतिष्ठा रखते हैं। आपकी सेवा निवृत्ति पर उप सभा तथा शैक्षिक संगठनों ने आपके सपरिवार मंगलमय भविष्य, दीर्घ आयुष्य व सुखमय जीवन की प्रभु से कामना की है।

आर्यसमाज कोटद्वार के पूर्व प्रधान का निधन

सतीश आर्य
कोटद्वार।

आर्यसमाज के पूर्व प्रधान कांशीराम आर्य का एक वर्ष की लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। वह 76 वर्ष के थे। श्री आर्य अपने पीछे चार पुत्र व दो पुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके निधन से आर्य बन्धुओं में शोक की लहर है। हार्दिक श्रद्धांजलि।

योग से होगा विश्व कल्याण

आओ 'योगयुक्त-रोगमुक्त' विश्व का संकल्प लें

सात्विक अन्न सात्विक मन बनाता है, तामसिक अन्न तामसिक मन बनाता है। यदि हमें स्वतन्त्र रहना है तो उस अन्न को पान करें, जिस पर किसी का अधिकार न हो। जिसका आहार करेंगे उसके गुण गाने ही पड़ेंगे। योगी का आहार ऐसा हो जिससे उसकी आत्मा का उत्थान हो। उसके रजो, तमों गुण मल, विक्षेप आवरण नष्ट हो जाएं। इसके साथ यम, नियमों का पालन करते हुए दसों प्राणों को एकाग्र करने वाला मोक्ष मार्गी हो सकता है।

परमात्मा की प्रेरणा सभी के आन्तरिक हृदय में उत्पन्न होती है जो उसके अनुसार अपने कर्म की दिशा बनाते हैं उनका अन्त: करण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। संसार की बुराईयां उनके हृदय में नहीं रुकती, उनकी मानवीयता पवित्र बन जाती है। दूसरे वह लोग होते हैं जो परमात्मा की प्रेरणा को स्वीकार न कर उनके चित्त में जैसे संस्कार होते हैं उसी के अनुरूप कार्य करते हैं। शुभ और अशुभ कर्म तो इनके संज्ञान में रहते हैं किन्तु संस्कारों के जाल में फंसे यह बाहर से कुछ और दिखाते हैं। यद्यपि वह यह जानते हैं कि मेरे अन्दर यह त्रुटियां हैं। किन्तु कमजोर संकल्प शक्ति के कारण उसको छोड़ नहीं पाते। यौगिक आत्मा आत्मबल, संकल्प से आत्मसाक्षात्कार कर परामानन्द को प्राप्त करती है।

योग के द्वारा चित्त पर संयम कर उर्ध्वागति (ऊँची) को प्राप्त होती है। चित्त पर संयम से इनका अहंकार चित्त का वाहन बन करके इन्हें अन्तरिक्ष में रमण करा देता है। जब आत्मा के मल, विक्षेप आवरण उससे दूर हो जाते हैं तब प्रकृति के मल विक्षेप आवरण भी उसे प्रभावित नहीं करते। स्थूल शरीर की सतोगुणी प्रवृत्ति के पश्चात् सूक्ष्म शरीर और फिर कारण शरीर के साथ द्युलोक में आत्मा रमण करती है। जिस प्रकार मानव के तीन शरीर होते हैं उसी प्रकार प्रकृति के भी तीन मण्डल स्थूल, सूक्ष्म, कारण होते हैं। मोक्ष उसी का होता है जो कारण से भी ऊर्ध्व आत्मा का उत्थान कर प्रभु के आनन्द में रमण करता है।

अन्न भी तीन प्रकार के होते हैं स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण। जब मानव स्थूल अन्न को त्याग देता है। बुद्धि और मन दोनों का समन्वय होने से उसका आहार बहुत सूक्ष्म हो जाता है। संकल्प मात्र से वह तृप्त होने लगता है। प्रवृत्तियों का निरोध तब होता हे जब अन्न पवित्र होगा। दूसरों के अधिपत्य को एकत्रित करने वाला द्रव्यपति योगी वन जाये यह असम्भव है। आज येग को रोग और तनाव मुक्ति के लिए प्रचारित किया जा रहा है। यम, नियम, और शुद्ध आहार-व्यवहार पर कोई आंग्रह नहीं है। वस्तुत: ऐसे लोग योग से कुछ सिद्धि प्राप्त तो कर लेते हैं, किन्तु उनकी आत्मा का उत्थान नहीं होता। वह संसार में प्रसिद्धि तो पा लेते है; किन्तु आत्मोज्ञानी और योगी नहीं बन पाते। उनके अन्त: करण में संस्कार बनते रहते हैं। अत: योगी उस काल में ऊँचा बनेगा जब अन्न का दोष नहीं होगा। निश्चय ही योगयुक्त विश्व से ही रोगमुक्त विश्व बनेगा। हमें योग मार्ग से ही तमाम विसंगतियों ओर व्याधियों की समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। योग से ही जीवन सुखमय बनेगा और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

व्यभिचार से बचने का उपाय

श्रद्धानन्द योगाचार्य

विवाह संस्कार में धान की आहुति प्रदान की जाती है क्योंकि जैसे धान की गेड़ बोकर, उसी को दूसरी जगह बोकर फसल लेते हैं, उसी प्रकार कन्या का जन्म जिस परिवार में होता है और विवाह जो दूसरे परिवार में होकर सुख समृद्धि होती है, और वर-कन्या दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते हैं। जैसे धान को बोकर नई फसल की उत्पत्ति होती है यदि धान का ऊपरी छिलका हटा दिया जाय तो वह भूसी बन जाता है जिसको अंग्रेजी में रेपसीड कहते हैं और चावल से कोई उत्पादन नहीं हो सकता है।

इससे सिद्ध होता है कि विवाह जब तक न हो, तब तक ईश्वर से सानिध्य बनाये रखें अर्थात् पति को परमेश्वर की भी संज्ञा दी जाती है क्योंकि जैसे संसार में परमात्मा एक है वैसे ही पति भी एक होता है और सप्तवदी में अन्तिम पद पर पत्नी से मित्रवत व्यवहार करने का संकेत देता है और जो धर्म से प्राप्त होवे उसे धर्मपत्नी कहते हैं।

इसलिए एक दूसरे के साथ धैर्यतापूर्वक बर्ताव करें और जहां धैर्यता टूटती है वहीं विवाद होता है। किन्तु वर्तमान समय में बॉय फ्रैण्ड/गर्ल फ्रैण्ड का प्रचलन चल रहा है। जबकि स्वाभविक सम्बन्ध माता-पिता भाई-बहिन के समकक्ष ही होते हैं। अत: इसके अनुसार व्यवहार करके पवित्रता बनाये रखें।

पूर्व उपमन्त्री आर्य समाज
कायमगंज (फर्रूखाबाद)

हम सदा वीर्यरक्षणरुप "सुत" यज्ञ करें

डॉ. अशोक आर्य

मानव उत्तम बनने के लिए सदा अपने जीवन को दिव्य गुणों से भरने का अभिलाषी होता है। इन दिव्य गुणों को पाने के लिए विधि ने कुछ नियम बनाएं हैं, जब तक इन नियमों का पालन नहीं किया जाता तब तक, हम यह दिव्यता नहीं पा सकते। इसके लिए तीन उपाय बताए गए हैं।

(क) हम क्रियाशील बनें, कर्मशील बनें (ख) हम कभी आलस्य न करें, आलस्य से शून्य हों। (ग) हम सदा ही सोमरक्षण के उपाय करें, वीर्यक्षण रुपी "सुत" यज्ञ सदा करते रहें। इसका ही प्रकाश यह मंत्र इस प्रकार कर रहा है: विश्वेदवासो असुर: सुलमा गन्त तूर्णयः। उस्त्रा इव स्वसराणि। ऋग्वेद 1.3.8।। गत मन्त्र में यह तथ्य स्पष्ट किया गया था कि हम जो सोम निष्पादन स्वरुप यज्ञ करते हैं, अपने शरीर में जो सोमरस बनाने का, शक्ति स्थापित करने का जो कार्य करते हैं, वह सब इस यज्ञ में ही आते हैं। इस सोमनिष्पादनरुप यज्ञ का यह सब भाग है।

इस तथ्य को ही आगे बढाते हुए यह मन्त्र तीन बातों में मुख्य रखते हुए उपदेश कर रहा है कि -: जब तक हम अपने शरीर में शक्ति का विकास नहीं करते, जब तक हम अपने शरीर को स्वस्थ नहीं बनाते, जब तक अपने शरीर को सोम के सुन्दर कणों से सुसज्जित नहीं करते, जब तक हम अपने शरीर को स्वस्थ नहीं बनाते। तब तक दिव्य गुण हमारे अंदर प्रवेश नहीं कर सकते। इसलिए दिव्यगुणों की प्राप्ति के अभिलाषी प्राणी को अपने अन्दर सोम कणों की रक्षा करने के लिए पवित्र बनना आवश्यक है, सदा स्वस्थ रहना आवश्यक है, सदा यत्नशील रहना आवश्यक है, तब ही हम इन दिव्यगुणों को अपने जीवन में देख पावेंगे किन्तु, इन्हें पाने का यत्न करना, इन्हें पाने का प्रयास करना आवश्यक है। इन्हें अपने जीवन में विकसित करने के जो उपाय बताए गए हैं, उन्हें करना भी आवश्यक है।

2. ये विश्वदेव कर्मो को अति शीघ्रता से करने वाले होते हैं। यह सदा क्रियाशील रहते हैं, सदा कर्मशील रहते हैं, सदा यत्नशील रहते हुए कर्म करते रहते हैं क्योंकि यह दिव्यगुण तो मिलते ही क्रियाशील बनाए रखने का यत्न करता है। जितना तीव्र गति से जीव कर्म करेगा उतना ही शीघ्र यह दिव्यगुण उसमें प्रवेश करेंगे। जो यत्न ही नहीं करेगा, उसके मुंह में तो सामने पड़ी थाली में से भोजन का एक ग्रास भी स्वयं उठ कर नहीं जा सकता। भोजन करने के लिए भी उसे कर्म करना ही होता है अन्यथा एक ग्रास भी अपनी क्षुधा को शान्त करने के लिए हम उपभोग नहीं कर सकते। फिर यह दिव्यता तो है कि कर्म पर आधारित, जब तक यत्न नहीं होगा, जब तक प्रयास नहीं होगा, तब तक यह कैसे मिल सकते हैं।

अत: वेद का यह मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे प्राणि। इन दिव्यगुणों को पाने के लिए तू कर्मशील बन, तू सदा यह प्रयास कर कि यह दिव्य गुण तेरे अन्दर प्रवेश कर सकें, तू स्वयं को पवित्र बना कि यह दिव्य गुण तुझे प्राप्त हो सकें। दिव्यगुणों को देने वाले यह देव आलस्य रहित होते हैं। भाव यह है कि बिना पुरुषार्थ के यह दिव्यगुण किसी को प्राप्त नहीं होते। जो आलसी बनकर सदा खटिया पर ही सोया रहता है, वह इन दिव्यगुणों को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। यह दिव्यगुण सदा उसे ही प्राप्त होते हैं जो सदा गतिमान रहता है, कर्मशील रहता है, सदा पुरुषार्थ करता रहता है। जीवन में एक बार इन गुणों को पाने के पश्चात भी अपने जीवन में गति, क्रियाशीलता को बनाए रखना आवश्यक है, ज्यों ही हम अकर्मण्य हुए, ज्यों ही हम आलसी हुए, ज्यों ही हमने पुरुषार्थ त्यागा, त्यों ही यह गुण हमारे अंदर से इस प्रकार गायब हो जाते हैं जैसे गधे के सिर से सींग।

अत: जहां दिव्यगुणों को पाने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है, वहां इन गुणों को अपने जीवन में बनाए रखने के लिए भी पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। पुरुषार्थ से ही इस जीवन की सब कामनाएं पूर्ण होती हैं। जो आलसी बनकर खटिया पर पड़ा रहता है, वह अपने समग्र जीवन में मन ही मन योजनाएं तो बनाता रहता है, हवाई किले तो बनाता रहता है किन्तु आलस्य के ही कारण वह प्राप्त कुछ भी नहीं कर पाता। स्वप्न अवस्था के समान उसकी योजनाएं होती हैं। स्वप्न अवस्था में जिस प्रकार मानव बहुत कुछ कर लेता है, बड़े-बड़े महलों तक का निर्माण कर लेता है, किन्तु ज्यों ही आंख खुलती हैं, उसके सब महल, उसकी सब योजनाएं धूल में मिल जाती हैं। कुछ ऐसा ही होता है पुरुषार्थहीन आलसी व्यक्ति के साथ भी।

अकर्मण्यता क्या है? आलस्य क्या है? यह सब मानव जीवन के दुर्गुण हैं। मानव का जीवन जब इन गद्देदार आसन रुपी दुर्गुणों से भरा हो तो उसमें सदगुणों के प्रवेश के लिए तो स्थान ही नहीं रह जाता फिर यदि सदगुण उसके पास आना भी चाहें तो कहां आकर रहें। अन्दर तो स्थान ही नहीं है। जब हमारा अन्दर खाली नहीं हो जाता, तब तक इन उत्तम गुणों का प्रवेश हमारे अन्दर हो ही नहीं सकता। अत: इन दुर्गुण रुपि गद्देदार आसनो को अपने अन्दर से निकालना होगा। जब तक हम इन गद्देदार आसनों का आनंद भोग रहे हैं, तब तक हम अच्छे गुणों के स्वामी नहीं बन सकते। अत: यह आवश्यक है कि हम आलस्य को त्यागकर पुरुषार्थ को अपने जीवन में धारण करें, सदा उत्तम कर्म करें ताकि हम दिव्यगुणों के स्वामी बन सकें। आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता, कर्म शून्यता, यह सब वह कार्य है, जो हमारे जीवन रुपी भूमि को उर्वरक नहीं होने देते। हमारे जीवन को कभी दिव्यगुणों से युक्त नहीं होने देते। इसलिए दिव्यगुणों के अभिलाषी प्राणी को सदा कर्मशील रहना आवश्यक है।

आलस्य तो भोग विलास की उर्वरा भूमि है, इसे अपने जीवन में स्थान नहीं देना चाहिए। मानव जीवन में प्रतिदिन उसे बिना रोकटोक के सूर्य की किरणें दिखाई देती रहती हैं। इन किरणों के दर्शनों से कोई यंत्र करके भी खुले स्थान पर रहते हुए रहित नहीं हो सकता। जब तक वह खुले स्थान पर है तथा दिन का समय है तो उसे सूर्य की किरणों के दर्शन होंगे ही। इससे वह किसी प्रकार भी बच नहीं सकता। इनसे बचने का एक ही उपाय है कि वह अन्धकार से भरे कमरे में चला जावे। अन्धेरा कमरा क्या है? एक प्रकार से अकर्मण्यता ही तो है, एक प्रकार से कर्महीनता का प्रतिरुप ही तो है, यह कर्म शून्यता का प्रतीक ही तो है। जहां अंधेरा है, वहां प्रकाश जा ही नहीं सकता और जहां प्रकाश है वहां अंधेरा रह ही नहीं सकता। ठीक इस प्रकार ही जहां पर आलस्य है, जहां पर अकर्मण्यता है, वहां पर दिव्य गुण रह ही नहीं सकते।

दिव्यगुण पाने के लिए हृदय का खाली होना आवश्यक है। अत: सदा कर्म में लगे रहने वाला, सदा क्रियाशील, सदा पुरुषार्थ में लगे रहने वाला प्राणी अपने जीवन में सोम का संग्रह करता है, सोम का संकलन करता है, सोम रक्षण दिव्यता का प्रतीक है। यह सोम हमें बताता है कि हम दिव्यगुणों के स्वामी बन गये हैं। सूर्य की किरणों का भूमि पर पड़ना जिस प्रकार अवश्यंभावी है, ठीक उस प्रकार ही सोम के संरक्षण के पश्चात हमारे जीवन में दिव्यगुणों का प्रवेश भी अवश्यंभावी है।

इसलिए हम सोमकणों के स्वामी बनेंगे तो दिव्यगुण हमें प्राप्त न हों, यह संभव ही नहीं है, अर्थात् यह दिव्यगुण हमें अवश्य ही मिलेंगे, यह निश्चित है।

शिप्रा अपार्टमेन्ट,
कौशाम्बी, गाजियाबाद

'योगयुक्त मानव – रोगमुक्त मानव' की अलख जगाने वाले

योगाचार्य 'श्री' स्वामी कर्मवीर जी

दिव्य योग मंदिर कनखल, हरिद्वार से शुरु हुई योग क्रान्ति आज वैश्विक रूप ले चुकी है तथा आर्ष ग्रन्थों और गुरुकुलों, महात्माओं तक सीमित योग ज्ञान अब धर्म निरपेक्ष रूप ले, आम\ आदमी की जरुरत और वैश्विक पहचान बन चुका है। वर्तमान में आचार्य प्रवर कर्मवीर जी लोनावाला, मुम्बई में महर्षि पतंजलि योग फाउन्डेशन ट्रस्ट के बैनर तले आम आदमी तक योग, पर्यावरण व सामाजिक शुचिता के बहुआयामी कार्यक्रम को मूर्त रूप देने में लगे हैं। दिव्य योग मंदिर, स्वामी रामदेव बनाम आचार्य श्री कर्मवीर की यदि बात की जाये तो कर्मवीर जी का चेहरा आचार्य चाणक्य के रूप में देखा जा सकता है। चन्द्रगुप्त को साधारण स्थान से राज सम्राट की पदवी देने वाले आचार्य चाणक्य जिस तरह राज गौरव की तरुणाई पर स्वतः एकान्त में चले गये वैसा ही नजारा बाबा कर्मवीर

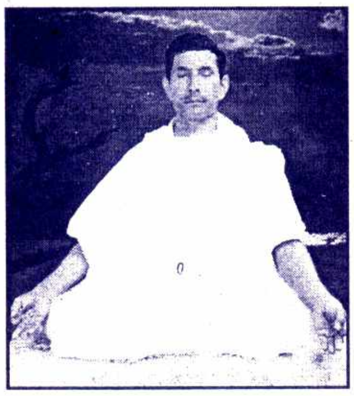

के चरित्र में दृष्टिगोचर होता है।

आचार्य कर्मवीर प्रारम्भ से ही योगनिष्ठ, तपोनिष्ठ, वेदज्ञ व दार्शनिक प्रवृत्ति के रहे। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वेद और योग में गहन अध्ययन कर दोनों विषय से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। चोटी के वेदज्ञ आचार्य रामनाथ वेदालंकार उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से उन्होंने धर्म, दर्शन योग व संस्कृति का विशद ज्ञान अर्जित किया तथा योग की अमूल्य निधि को जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया। आपने अध्ययन काल में आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर में रहते हुए मॉरिशस के विद्वान साथी विरजानन्द व सुनील चत्वा के साथ ८० के दशक में योग शिविर प्रारम्भ कर दिये तथा आसाम, भूटान, मेघालय, सहित पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में जहां विधर्मी लोग धर्म परिवर्तन का दुष्चक्र रच रहे थे, वहां चिकित्सा व सेवा कार्यों को अंजाम दिया। उसके बाद १९९२ में वह त्रिपुरा योग मंदिर कनखल में रहने लगे और यहां भी योग, आयुर्वेद का गहन कार्य करते हुए पूर्वोत्तर क्षेत्रों में सेवा कार्यो को जारी रखा। उसके बाद बाबा कर्मवीर को स्वामी रामदेव जी-हरियाणा, आचार्य बालकृष्ण जी-दिल्ली दो ऐसे साथी मिले, जिससे योग त्रिवेणी की इस धारा ने योग

- **८० के दशक में किये योगशिविर प्रारम्भ**
- **असम, भूटान, मेघालय में किये चिकित्सा व सेवाकार्य**
- **स्वामी रामदेव व आचार्य बालकृष्ण के साथ मिलकर कनखल, हरिद्वार में की दिव्य योग मन्दिर की स्थापना**
- **योगयुक्त मानव-रोगमुक्त मानव के उद्घोष को कर रहे हैं साकार**

सागर को पूरे विश्व पर बरसाने का कार्य किया तथा त्रियोग मूर्ति (बाबा कर्मवीर, स्वामी रामदेव व आचार्य बालकृष्ण) ने कृपालु बाग कनखल हरिद्वार में दिव्य योग मंदिर की स्थापना की। ट्रस्ट के गठन के समय तीनों साथियों में से एक को सन्यास धारण कर अध्यक्ष बनना था।

इस दायित्व को स्वामी रामदेव ने निभाया और रामदेव अध्यक्ष, कर्मवीर वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा बालकृष्ण महामंत्री पद पर प्रतिष्ठित हुए। त्रियोगमूर्ति के पावन सानिध्य में सम्पूर्ण योग क्रान्ति का उद्घोष ८० के दशक में हरिद्वार से हुआ। २१वीं सदी में योग गंगा प्रवाहित करने का असल आचार्य श्री कर्मवीर ने किया। 'योग भगाये रोग' के उद्घोष के साथ वैदिक परम्परा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे दिव्य योग मंदिर व महर्षि पतंजलि योग फाउन्डेशन निश्चित रूप से साधुवाद के पात्र हैं।

-यतीन्द्र विद्यालंकार

सहयोगी योगाचार्यों के साथ योगमुद्रा में आचार्य कर्मवीर जी महाराज -केसरी

योग एवं प्राणायाम शिविरों पर विशेष परिशिष्ट

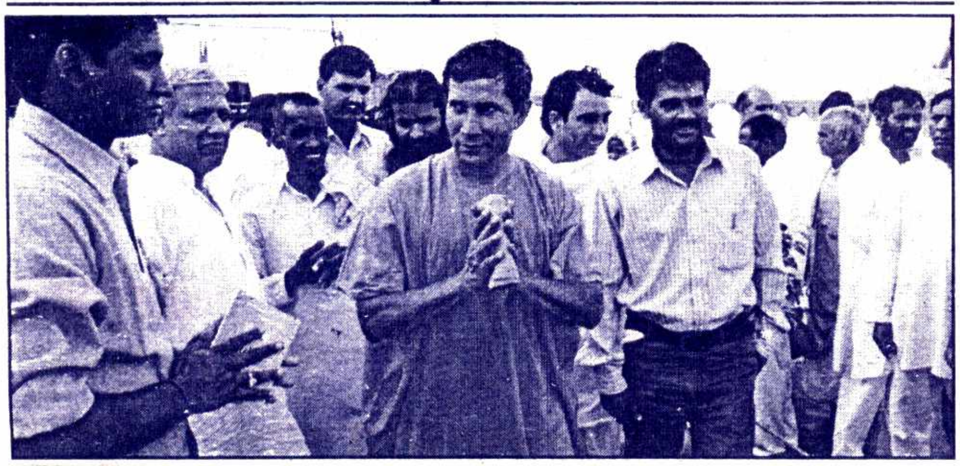

श्रद्धालुओं का अभिवादन स्वीकार करते बाबा कर्मवीर जी महाराज -प्रतिनिधि

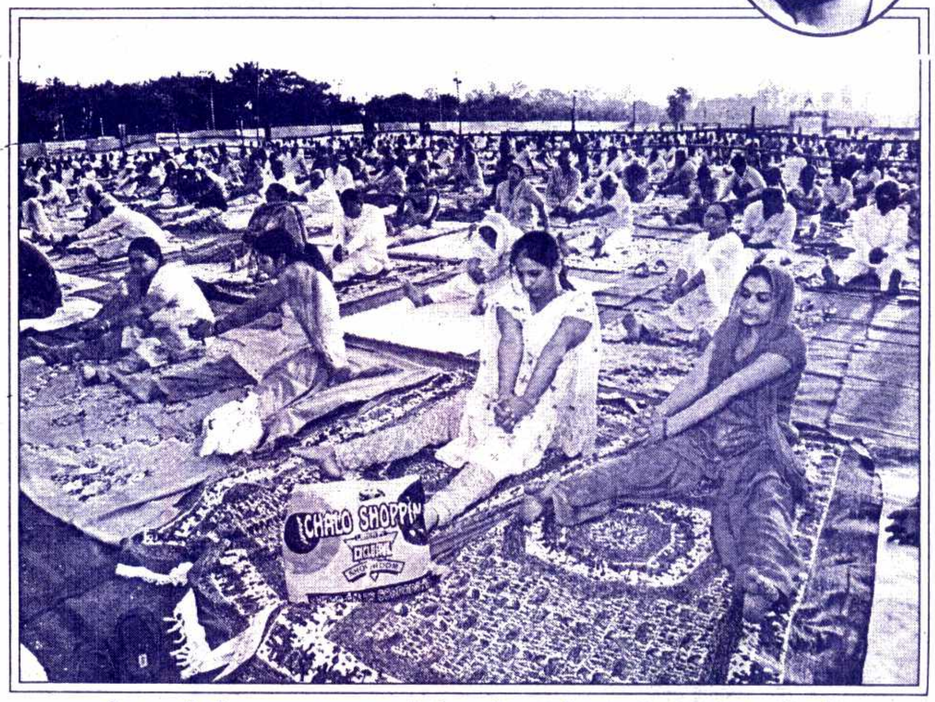

योग भगाये रोग- उत्तम स्वास्थ्य के लिए योग करते जनसमूह का दृश्य - केसरी

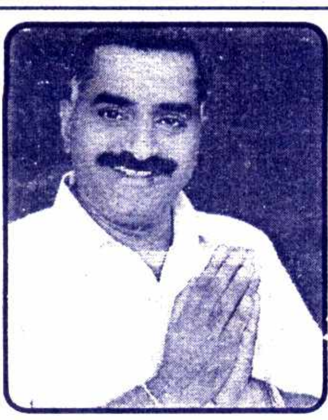

योग महर्षि स्वामी कर्मवीर जी महाराज

का योग संचेतना के लिए

हार्दिक अभिनन्दन

जन समस्याओं के समाधान व जनसेवा के लिए प्रतिबद्ध

आपका अपना

प्रधान मांगेराम आर्य

मंत्री- आर्यसमाज, ग्रेटर नोएडा/ कोषाध्यक्ष- जन विकास मंच

निवास- ग्राम टिटौड़ा, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0), मोबा0- 09311842778

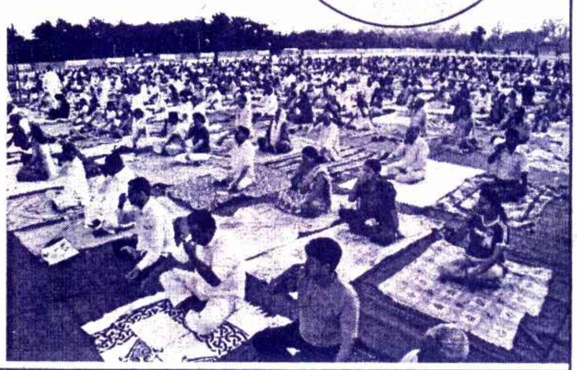

पूज्यपाद योग महर्षि स्वामी कम

जन विकास मंच के तत्वावधान में

यज्ञ कराती हुई डॉ. पवित्रा एवं अन्य

महर्षि पतंजलि अन्तरराष्ट्रीय योगपीठ के योग विज्ञान शि

दीप प्रज्वलित करते हुए स्वामी कर्मवीर साथ में अजित दौला

स्वामी कर्मवीर जी

चला योग का महाभियान- निश्चय होगा जन कल्याण,

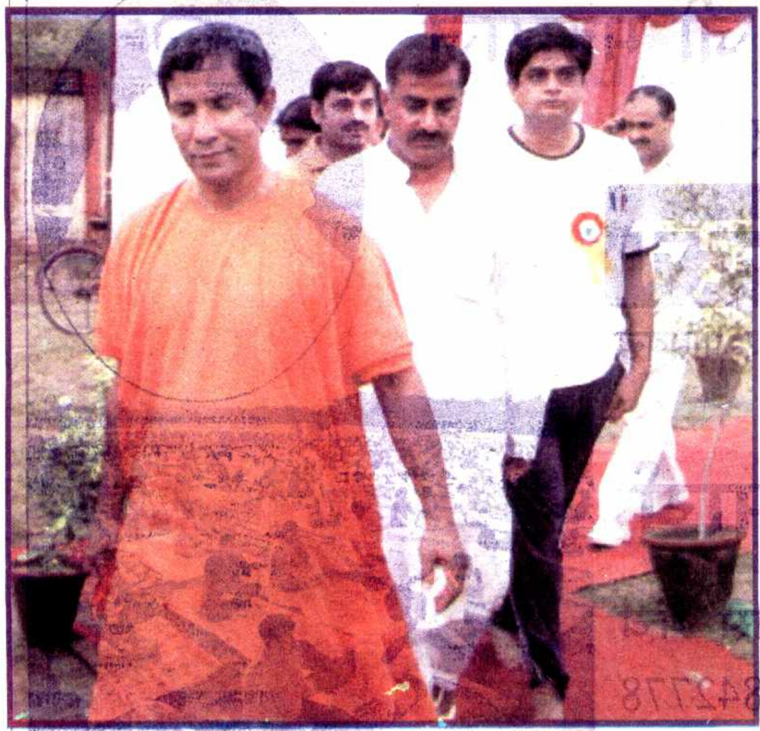

स्वामी कर्मवीर जी के साथ में मांगे राम आर्य व अन्य

वीर जी के पावन सानिध्य में

बही ग्रेटर नोएडा में योग की धारा

र से पूर्व यज्ञ करते हुए स्वामी कर्मवीर जी महाराज

योग शिविर में आर्यसमाज ग्रेटर नोएडा के प्रतिनिधिगण

अजित सिंह दोला (अध्यक्ष)
जन विकास मंच

सुमन नाथ योग के अनुभव बताती हुई

समाज हो संस्कारवान- स्वामी जी का यह आहवान

श्री श्रीरविशंकर के साथ स्वामी कर्मवीर जी

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम के साथ स्वामी जी

योग, प्राणायाम, सुशिक्षा, गौसंवर्द्धन, कृषकों की उन्नति से ही राष्ट्र कल्याण

नोएडा। महर्षि पतंजली योग विद्यापीठ ट्रस्ट के अध्यक्ष योगाचार्य स्वामी कर्मवीर महाराज ने आर्यावर्त केसरी के सुमन कुमार वैदिक से विशेष बातचीत में ट्रस्ट की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि यह ट्रस्ट योग प्राणायाम, सुशिक्षा, गौसंवर्धन, स्वास्थ एवं कृषकों की उन्नति के साथ राष्ट्र कल्याण की भावना से कार्य कर रहा है। आज हमारा राष्ट्र भ्रष्टाचार, जातिवाद, उग्रवाद जैसी समस्याओं से ग्रसित है, जिसे संस्कारित शिक्षा पाये युवा ही समाप्त कर पायेंगे। राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में भटके लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ पायेंगे। इस शिक्षा में शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान है। महर्षि पतंजली योग विद्यापीठ ट्रस्ट इस उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उत्तराखण्ड राज्य की सीमा पर पुरकाजी में गंगनहर के निकट वैदिक संस्कार विद्यापीठ की स्थापना करने जा रहा है, जिसमें ब्रह्मचारियों को आधुनिक विज्ञान अंग्रेजी, संस्कृत शिक्षा सहित वैदिक संस्कार युक्त शिक्षा दी जायेगी। प्रकृति के श्रृंगार स्वरूप वक्ष-वनस्पतियां मनुष्य के स्वास्थ और जीवन के सर्वाधिक निकटम् अंग हैं। इन्हीं के उपयोग से मनुष्य यावत् जीवन हृष्ट-पुष्ट रह सकता है। स्वास्थ एवं दीर्घ जीवन प्रत्येक प्राणी की प्रथम कामना है। इसका अनुभव हम रोगी की पीड़ा और उससे छुटकारा पाने की बैचेनी को देखकर कर सकते हैं। घरों के निकट तथा सड़कों और नदियों के किनारे बहुत से पौधे लता झाड़ियों के रुप में रहते हैं। लोग इन्हें विभिन्न क्षेत्रीय नामों से जानते हैं, परन्तु इनके औषधिय: गुणों का ज्ञान न होने से आधुनिक हानिकारक औषधियों का सहारा लेते हैं। हमारे व्यवहार में 176 जड़ीबूटियां प्रयोग में आती हैं जो हमारे घर के आस-पास या किचन में मौजूद रहती हैं, जिनका प्रभाव रोगों पर अधिक होता है। हम शिविरार्थियों को प्रत्येक दिन कुछ ऐसी जड़ीबूटियों से अवगत कराते हैं। जिससे समाज में आयुर्वेद के प्रति जागरूकता आये।

हमारी योजना है कि गौ संवर्धन के लिए भारतीय नस्ल की गायों की जो नस्ल समाप्त होती जा रही है उन नस्लों को सुधारना उन्हें सम्वर्धन हमारा प्रयास है, जिससे गाय बचें। समाज को दूध मिले तथा किसानों को गोबर की खाद मिले। किसान समृद्ध हों, यह भी दृष्ट का उद्देश्य है। यह एक विडम्बना ही है कि समग्र स्वास्थ के आधार पर जिस भारत वर्ष की विशिष्टता एवं सम्पन्नता का आंकलन सम्पूर्ण विश्व में किया जाता था, उसे पुन: जीवित करने को हमारा संकल्प है।

महर्षि पतञ्जलि अंतर्राष्ट्रीय योगपीठ द्वारा प्रकाशित साहित्य :

सुस्वास्थम्- हमारी किचिन ही हमारा एक औषधालय है, जहां हमारे परिवार में मिर्च-मसालों के रूप में औषधियां उपलब्ध हैं।

नैरोग्यम :- भारत में जड़ी बूटियों का उपयोग अत्यन्त प्राचीन काल से होता रहता है। इस पुस्तक में सभी औषधियों को सचित्र उसके गुण धर्म तथा प्रयोग विधि के साथ विस्तृत वर्णन है

आरोग्यम् :- यह एक विडम्बना है कि समग्र स्वास्थ के आधार पर जिस भारत वर्ष की विशिष्टता एवं सम्पन्नता का सम्पूर्ण विश्व में सम्मान किया जाता था, हमने उस चिकित्सा पद्धति को विस्मृत सा कर किया था जिसे पुन: स्थापित करने का उद्देश्य इस पुस्तक का लक्ष्य है। इसमें आयुर्वेद भी विशुद्ध चर्चा के साथ हमारा परिवार अच्छे स्वास्थ के साथ कैसे जीवन यापन कर सके सभी खाद पदार्थो का वर्णन तथा चरक जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थों का सार रूप में है। जिसे पढ़कर अच्छा स्वास्थ लाभ मिलेगा।

प्राण साधना और योग रहस्य :- इसके अन्दर सभी प्राणायाम के साथ शोध किये, ऐसे आसनों का वर्णन भी है, जो हमारे लिए उपयोगी तथा कम समय में लाभ दे सकते हैं। इस पुस्तक में एक नया अध्याय जोड़कर तीस रोगों के लिए योग का पैकेज दिया है। जिससे शरीर स्वस्थ रह सके। गर्भवती महिलाओं के लिए योग और प्राणायाम है जिससे अच्छे संस्कार गर्भ में बालकों को मिल सकें तथा नवजात बच्चों को जन्मजात बिमारी न हो। आज करोड़ों बच्चों में मन्दबुद्धि और मंगोलियन जैसी बिमारी हो रही है, जिससे शरीर के साथ वैचारिक शोषण हमें मिले, परिवार में संस्कारित शिशु राष्ट्र की प्रगति में अहम भूमिका निभा सके।

ट्रस्ट के उत्पाद :- चाय के विकल्प में पेय जो 70 रोगों को दूर करता है। अगरबत्ती जो 35 रोगों को दूर करती है तथा यज्ञ सामग्री से 42 रोग दूर होते हैं।

योग महर्षि स्वामी कर्मवीर जी महाराज
का ग्रेटर नोएडा पधारने व योग शिविर द्वारा
आरोग्य जीवन जीने के गुर सिखाने पर
हार्दिक अभिनन्दन
जगत सिंह दोसा
वरिष्ठ समाजसेवी
निवास : सी- १९, सैक्टर- ३, सुशांत सिटी, मेरठ, उ०प्र०

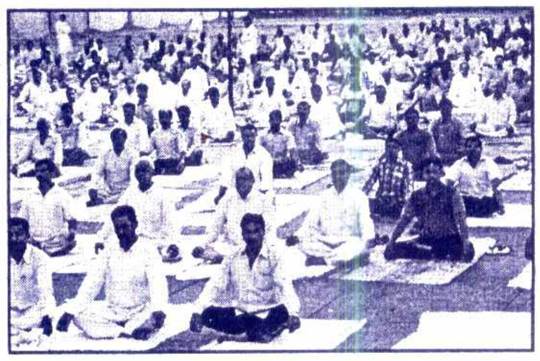

योग भगाए रोग

योग शिविर के लिए स्वामी कर्मवीर जी महाराज को कोटिशः नमन्
चमन शास्त्री
आर्यसमाज
सी- ४०३, सै०- ३६, ग्रेटर नोएडा, उ०प्र०

योगयुक्त रोगमुक्त समाज
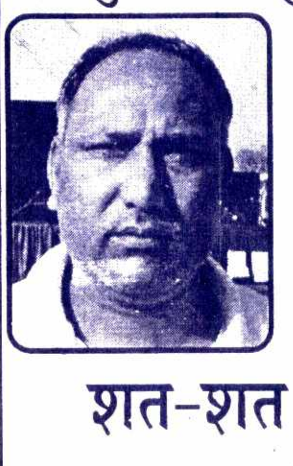
योग एवं प्राणायाम शिविर के माध्यम से स्वास्थ्य-लाभ कराने पर
शत-शत नमन्
मूलचन्द आर्य
मैसर्स महेश पेन्ट हाउस
सूरजपुर, ग्रेटर नोएडा, उ०प्र०

योग महर्षि स्वामी कर्मवीर जी महाराज का

योग का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने के लिए
हार्दिक अभिनन्दन
पदमावती आर्या
मैसर्स गुप्ता ज्वैलर्स
गामा- II, ग्रेटर नोएडा, उ०प्र०

ग्रेटर नोएडा में बही योग की गंगा : शिविरार्थियों के अनुभव

प्रस्तुति : सुमन कुमार वैदिक

(1) शिविरार्थी श्रीयुत् श्रीपाल सिंह का कहना है कि शिविर स्वास्थ्य के साथ वैयक्तिक जीवन की उन्नति के लिए बड़ा उपयोगी रहा है।

(2) योगसाधक श्री जयप्रकाश सिंह ने कहा कि योग की विधि वैज्ञानिक होते हुए सरल और आकर्षक है। वर्ष 2009 में भी स्वामी जी के शिविर में भाग लिया था। आम जनता को भी योग सीखने में कोई कठिनाई नहीं हो रही है। यद्यपि कुछ आसन, जो मुझे करने में कठिन लगते थे, अब आसानी से होने लगे हैं।

(3) ग्रेटर नोएडा निवासी श्री शीशराम ने बताया कि जनसेवा ट्रस्ट का प्रबन्ध बहुत अच्छा रहा है। मंच सज्जा, माइक्रोफोन अच्छा है और स्वामी कर्मवीर जी द्वारा बतायी गयी जड़ी-बूटियों से बहुत ज्ञानार्जन हुआ।

(4) एक और शिविरार्थी श्री जीत आर्य कहते हैं कि मैं यहां की कमियां निकालने नही आया हूं, बल्कि अपनी कमी दूर करने आया हूं। मैं स्वयं अपनी योग्यता बढाते हुए अपने परिवार, आसपास के क्षेत्र में इस योग का प्रसार-प्रचार करूंगा।

(5) पल्ला से आने वाले श्री देवमुनि जी का विचार है कि जनसेवा ट्रस्ट ने स्वामी कर्मवीर जी महाराज का योग शिविर लगाकर ग्रेटर नोएडा में योग के इच्छुक लोगों के लिए एक क्रान्तिकारी दस्तक दी है।

(6) योगसाधक श्री मूलचन्द ने बताया कि कई वर्षों से नजला-जुकाम से परेशान था। कैलाश हॉस्पिटल के डॉक्टरों ने आप्रेशन के लिए कहा। वर्ष 2009 में स्वामी कर्मवीर जी के शिविर में भाग लिया। उसके बाद निरंतर प्राणायाम योगासन करने से आज पूर्णतः स्वस्थ हो गया हूं।

समाजसेवी मांगेराम आर्य एवं अजीत सिंह दौला। -केसरी

समाज के प्रति समर्पित है जनविकास मंच- ग्रेटर नोएडा

सुमन कुमार वैदिक (चलभाष- ९४५६२७४३५०)

जनविकास मंच के नौजवान समाजसेवी अजीत सिंह दौला ने आर्यावर्त केसरी को बताया कि हमारे प्राचीन ऋषि-महर्षियों का कहना है कि यह मानव शरीर बड़ा ही दुर्लभ है। इस शरीर को पाने के बाद जिसने अपना उद्धार नहीं किया, उसने मानो यह सुनहरा मौका व्यर्थ में गंवा दिया। लक्ष्य को प्राप्त करना परोपकार से ही संभव हो सकता है। मन से सदा दूसरों की भलाई का भाव बना रहे। हमारा संघर्ष भी दूसरों को सुखी बनाने के लिए हो। इसके लिए समाजसेवा के क्षेत्र में निस्वार्थ जनसेवा के उद्देश्य से कार्य करने के लिए ही जनविकास मंच बनाया गया है। राष्ट्र के निर्माण की इकाई मानव है। मानव को स्वस्थ रखने का माध्यम है योग, जिसके विशेषज्ञ हैं स्वामी कर्मवीर महाराज। हमने स्वामी जी के 2008, 2009 के ग्रेटर नोएडा के योग शिविर में अनुभव किया तथा क्षेत्र के लोगों की मांग पर पुनः योग शिविर लगाने का संकल्प लिया है। तथा इस क्षेत्र में औषधालय की भी स्थापना की जाएगी। साथ ही यज्ञ इत्यादि के कार्य भी निरंतर कराए जाएंगे।

जनविकास मंच का पता है-

अजित सिंह दौला

अध्यक्ष-

जनविकास मंच

प्रदेश कार्यालय १४, प्रथम तल, कृष्णा अपरा प्लाजा, अल्फा-१, ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्धनगर, मो०- 9810623336

E-mail:ajitsinghdaula@gmail.com

महर्षि पतंजलि योगपीठ के संस्थापक

श्रद्धेय स्वामी कर्मवीर जी महाराज के पावन सानिध्य में

योग सीखने वाले शिविरार्थियों का जनविकास मंच की ओर से

हार्दिक अभिनन्दन

अजित सिंह दौला (अध्यक्ष), राजीव नागर, संजीव बैंसला, संजय गुर्जर प्रमुख, वीरेन्द्र खारी (उपाध्यक्षगण), राजवीर सिंह रौंसा (महासचिव), सुरेन्द्र सौरभ (सचिव), मांगेराम आर्य (कोषाध्यक्ष), सूबे सिंह (संगठन प्रमुख), रघुराज भाटी (मीडिया प्रभारी), हरवीर खटाना (प्रचार मंत्री), उदयवीर सिंह, राजपाल खटाना, रविन्दर मोतला (सदस्यगण)।

योग भगाए रोग

योगयुक्ति-रोगमुक्ति

योगाचार्य श्रद्धेय स्वामी कर्मवीर जी को हार्दिक नमन्

डॉ० नुकुल मोतला

दंत चिकित्सक

एच- ५, बीटा- द्वितीय, ग्रेटर नोएडा, उ०प्र०

हार्दिक शुभकामनाएं

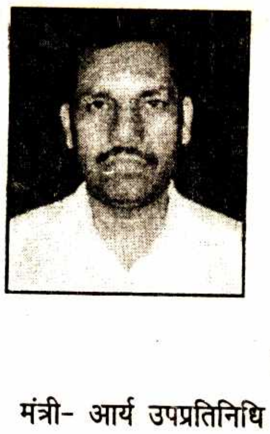

शिव कुमार आर्य

जिलाध्यक्ष

विश्व हिन्दू परिषद

मंत्री- आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गौतमबुद्धनगर

चलभाष : 09818084674

टॉवर नं०-६, एनआरआई सिटी, ग्रेटर नोएडा

जिला- गौतमबुद्धनगर, उ०प्र०

नास्ति योगात् परं बलम् नास्ति योगात् परो बन्धु।

अयं तु परामोधर्मो योगेनात्मदर्शनम्।।

अर्थ : योग से बढ़कर कोई बल नहीं है, और न ही योग से अधिक कोई हितैषी है। योग के द्वारा ही आत्मदर्शन करना परम धर्म है।

सुमन कुमार वैदिक

प्रबन्ध सम्पादक- आर्यावर्त केसरी/ प्रायोजक- परिशिष्ट

जे- ३८०, बीटा- द्वितीय, ग्रेटर नोएडा

चलभाष : ०९४५६२७४३५०

वर चाहिए

◆मेरी पुत्री प्रीति तिवारी, आयु 32 वर्ष, एम.ए. संगीत, राजनीति विज्ञान, सीबीएससी मान्यता प्राप्त पब्लिक इण्टर कालेज में संगीत शिक्षिका, गौतम गोत्र, ग्रहकार्य में दक्ष, शुद्ध शाकाहारी, सुन्दर, सुशील, व्यवहार कुशल के लिए सेवारत या व्यावसायी सजातीय वर चाहिए।। **सम्पर्क करें- हेमचन्द तिवारी, वेव इण्डस्ट्रीज, शुगर मिल, जोया रोड, अमरोहा (8958902427)**

◆मेरी पुत्री ज्योति भारद्वाज, आयु 25 वर्ष, 5'-6'' आकर्षक व्यक्तित्व, रंग साफ (एम.ए. संस्कृत, बी.एड., नेट, एम.ए. हिन्दी अध्ययनरत), महाविद्यालय में प्रवक्ता, गौर वर्ण को दहेज रहित विवाह हेतु आर्य विचारों का सात्विक, शाकाहारी, सुन्दर, सुशील वर चाहिए। **सम्पर्क– वेद प्रकाश, उपनिरीक्षक– बीएसएफ, 102–ईडब्ल्यूएस, आवास–विकास–प्रथम, डीएम रोड, बुलन्दशहर–203001 (मोबा. : 8859943530)**

◆मेरी पुत्री गार्गी शर्मा, आयु 22 वर्ष, कद 5'-6'', बी.ए., बी.एड. तथा एम.ए. (अर्थशास्त्र) के साथ ही पी0जी0 डिप्लोमा इन मास कम्युनिकेशन में अध्ययनरत्, सुन्दर, सुशील, पिता राजकीय सेवा में अधिकारी एवं माता अध्यापिका, के लिए आर्य विचारों के सुयोग्य वर की आवश्यकता है। **सम्पर्क करें- सुमन कुमार वैदिक, जे-३८०, बीटा-II, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र. (09456274350)**

◆मेरी पुत्री , आयु 32 वर्ष, 5'-5'' बी.टेक., एम.बी.ए., गुड़गांव में कार्यरत, आय 30 लाख रुपये वार्षिक, गौर वर्ण, शुद्ध शाकाहारी, सुन्दर, सुशील, व्यवहार कुशल के लिए सेवारत या व्यावसायी वर चाहिए। जाति बंधन नहीं। **सम्पर्क करें- नन्द लाल गुगलानी, जे-273, गामा-II, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष: 9911215361, 0120-4296238**

वधू चाहिए

◆मेरे पुत्र सुमित अग्रवाल, आयु 38 वर्ष, 5'-9'' आकर्षक व्यक्तित्व (एम.ए. हिन्दी), एम.फिल, आइजीडी (बोम्बे), जूनियर म्यूजिक डिप्लोमा, ल्युब्रिकेटिंग ऑयला का निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में, को + सुयोग्य वधू चाहिए। तलाकशुदा, विधवा भी मान्य, जातिबन्धन नहीं। **सम्पर्क–विनोद कुमार, 51, मौह0– सोसायट, मण्डी धनौरा (अमरोहा), मोबा. : 08923285659**

◆मेरे पुत्र अभय कुमार अग्रवाल, आयु 26 वर्ष, 5'-8'' आकर्षक व्यक्तित्व, रंग साफ (इंटर मीडिएट), निजी दुकान व मकान, को सुन्दर, सुशील वधू चाहिए। ब्राह्मण व विश्नोई भी मान्य। **सम्पर्क– सुभाष कुमार अग्रवाल, स्वीटी जनरल स्टोर एवं गिफ्ट सेंटर, फल चौरहा, जामा मस्जिद, धामपुर (बिजनौर) उ.प्र. (मोबा. : 09897743716)**

◆गुप्ता वैश्य 5'-4'', निजी व्यवसाय, अच्छी आय, आयु 40 वर्ष, परित्यक्त एक पुत्र आयु 9 वर्ष को 35 वर्षीय वधू चाहिए। विधवा, बांझ मान्य। जाति बंधन नहीं।

सम्पर्क करें- मुकेश कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री रणवीर शरण गुप्ता, मौहल्ला किला, सनातन धर्मशाला के पास, वन्स मसाला चक्की, अफजलगढ़, जिला- बिजनौर (08881017248)

◆मेरे पुत्र अक्षय माहेश्वरी, आयु 24 वर्ष, 5'-8'' बी0कॉम0 , एम0बी0ए0 (दिल्ली), बी0एच0ई0एल0 भटिण्डा (पंजाब) में ए0ओ0 के पद पर कार्यरत, 51000 रुपये प्रतिमाह, माहेश्वरी वैश्य (सोमनी) गोत्र, रंग गेंहुआ, आकर्षक व्यक्तित्व के लिए, शुद्ध शाकाहारी, सुन्दर, सुशील हेतु वधू चाहिए। एम0बी0ए0/ पी0एच0डी0 को वरीयता। माता-पिता राजकीय सेवा में पेंशनर। **सम्पर्क करें- सत्यप्रकाश आर्य, एडवोकेट, १४३- विजय नगर कालोनी, बदायूं (उ०प्र०), (मोबा. : 09720357792)**

◆मेरे पुत्र विजय कुमार कपूर, आयु 35 वर्ष, 5'-11'', इण्टरमीडिएट, निजी व्यवसाय, सुनार कार्य, निजी दुकान तथा मकान, आय- 20 हजार रुपये मासिक, आकर्षक व्यक्तित्व, तलाकशुदा के लिए आर्य विचारधारा की सुन्दर, सुशील व सुयोग्य वधू चाहिए। केवल अविवाहित या विधवा ही सम्पर्क करें। **सम्पर्क करें- ओमप्रकाश कपूर, मकान नं०- 1378, डोगला रोड, राजपुरा टाउन, पटियाला (मोबा. : 09780266274)**

◆मेरे पुत्र रंजीत कुमार, उम्र 32 वर्ष, कद 5'8'', गौर वर्ण, सुडौल शरीर, ब्राह्मण जाति में उत्पन्न, एम0ए0 (समाज शास्त्र), बी0एड0, टीईटी, पी0जी0 डिप्लोमा- योग व प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक औषधियों का थोक व्यापार, 60,000 रुपये से अधिक मासिक आय (माता गृहणी, व पिता का संयुक्त व्यवसाय, एक बहिन विवाहित व एक भाई व एक बहिन अविवाहित) हेतु- गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त वैदिक विचारों वाली विदुषी वधू चाहिए। दहेज रहित विवाह, जाति बन्धन नहीं। **संपर्क करें- श्री विजय मिश्रा, निकट जानकीदास बगीचा, शाहमीर तकिया, दुर्गा स्थान, गेवाल विगहा, जि०- गया (बिहार)- 823001, (मोबा. : 09334975738, 09334675215)**

यज्ञ एक सर्वांग पूजा

सुमन कुमार वैदिक

वैदिक काल से ऋषि-मुनि और मानव यज्ञ के द्वारा पूजा करते आये हैं। मध्यकाल में वाममार्गियों के इसमें हिंसा प्रारम्भ करने से यह समाप्त होने लगी। महर्षि दयानन्द ने 'वेदों की ओर चलो' का उद्घोष कर, वेद और यज्ञ को पुनः महत्व प्रदान किया। यज्ञ एक सर्वांग पूजा है, जिसमें पांच महाभूतों का पूजन होता है। ये पंच महा भूत प्रकृति और हमारे शरीर- दोनों में कार्य कर रहे हैं, जिनमें अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु और अन्तरिक्ष आते हैं। इन पांचों महाभूतों की एक साथ पूजा की विधि देवपूजा कहलाती है, क्योंकि यह ऐसा पूजन है, जिसमें ऊर्जा उत्पन्न होती है। समिधा को प्रदीप्त कर घृत, सामग्री की आहुतियों से उत्पन्न तरंगें वायु, अन्तरिक्ष में गकित करती हैं। शब्द इन तरंगों के साथ जाता है, और वह नित्य (कभी नष्ट न होने वाला) बन जाता है। देवपूजा द्वारा पितरों की पूजा भी हो जाती है। पितर वह होते हैं, जो हमें ऊंचे मार्ग पर ले जाते हैं। देवयज्ञ से पुरोहित, बह्मा, उद्‌गाता चैतन्य देव हैं, पितर हैं, उनका भी पूजन हो रहा है। पूजा का अर्थ है सदुपयोग, अर्थात जो विद्या का उन्होंने अध्ययन किया है, उसका यज्ञ के द्वारा उपयोग हो रहा है।

यज्ञ अपने में सर्वांग पूजा इसलिए भी है, क्योंकि संसार की कोई वस्तु नहीं रहती, जहां यज्ञ की वृत्तियां नहीं जातीं। अन्य माध्यम से साधना पूजा करने से यह लाभ सभी को नहीं प्राप्त होता, जैसे कोई जल वृक्ष में अर्पित कर रहा है, सूर्य को अर्क दे रहा है, वहां जल का लाभ उस वृक्ष और व्यक्ति तक ही सीमित रहता है। परन्तु यज्ञ अपने तक सीमित नहीं। यह सार्वभौम बन करके तरंगों में तरंगित हो, सभी को लाभ देता है। इसलिए अपने मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए दूवपूजा करें।

यज्ञ वेदमंत्रों के साथ किया जाता है। आज के विद्वान कहते हैं कि इससे वेदविद्या की रक्षा होती है, इसलिए मंत्रों से यज्ञ किया जाता है। इसका यह सही उत्तर नहीं है। हमारे यहां वेदपारायण यज्ञों की परम्परा सृष्टि के प्रारम्भ से ही रही है। वाममार्ग काल मे जब हमने वेद पढ़ना छोड़ दिया, तब एक मंत्र से यज्ञ करने लगे। वेदपारायण यज्ञ इसलिए भी होने चाहिए, क्योंकि प्रत्येक वेदमंत्र का कोई न कोई देवता है। उस देवता का संबन्ध पंच महाभूतों से रहता है, आहूति से रहता है। जैसे इन्द्र, अग्नि, जल इत्यादि देवताओं के मंत्र हैं।

आर्यसमाज के तृतीय नियम में स्वामी दयानन्द ने कहा है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है। अर्थात वेदमंत्र से विद्या का विशेष समन्वय रहता है। यज्ञ से उत्पन्न सुगंध आती है, जो अपने-अपने रूपों में परिणत हो जाती है। जैसे मानव आहार करता है। वह जठराग्नि में तपने के पश्चात् उसका रस बनकर समान प्राण के पास पहुंचता है, जो उसे सारे शरीर के भागों में पहुंचा देता है। वह ऐसी सत्ता प्राण है, जिसमें प्रत्येक इन्द्रियों का भाग उन्हें प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार यज्ञमान जब वेदमंत्रों से आहुति देता है, विशुद्ध रूप में ब्रह्मा के मार्गदर्शन में वेदमंत्र गान कर आहुति दी जाती है। वह पंचमहाभूत के लिए होती है। शब्द उत्पत्ति भी पंचमहाभूत से होती है, क्योंकि शब्द में अग्नि, जल, पृथ्वी, अन्तरिक्ष में गति देने वाला वायु (प्राण) सभी हैं। एक भी कम हो, तो शब्द उत्पन्न नहीं हो सकता। मुख के सात द्वारों में विद्मान सात देवताओं के सम्पर्क में शब्द ध्वनित होता है। वेदमंत्र के साथ दी गयी आहुति अग्नि (देवताओं के मुख) द्वारा सभी देवताओं को प्राप्त हो जाती है। इसीलिए यज्ञ अपने में पूर्ण सर्वांग पूजा कहलाता है। **(लेख का अधार ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का प्रवचन)**

फोन- ९४५६२७४३५०

अध्यापिका की आवश्यकता है

एक आर्य विचारधारा की अध्यापिका(शिक्षिका), दो बच्चियों (5 व 4 वर्ष) की शिक्षा हेतु। भोजन-आवास की व्यवस्था निःशुल्क। शैक्षिक योग्यता- NTT या B.Ed. को वरीयता। सम्पर्क हेतु पता है- 461, भावलपुर सोसाइटी, सै0-4, प्लॉट न0-1 द्वारिका, नई दिल्ली-75 मोबा० - 09868893294, 09868419015

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

योगिराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रजभूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्रप्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरांत ही विद्यार्थी को कक्षा-6 एवं 7 में ही योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है, अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम चार अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा-8 में प्रवेश पा सकता है। गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः छात्र का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लावें।

गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। इसके साथ ही भोजन, आवास, एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान एवं राष्ट्रभक्त तथा ऋषिभक्त बनाकर, व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

आचार्य स्वदेश, कुलपति (09456811519)

आचार्य हरिप्रकाश, प्राचार्य (09457333425, 09837643458)

नवजीवन व चेतना का त्योहार है नवसंवत्सर

डा. बीएल टेकड़ीवाल

नवसंवत्सर हमारी गौरवशाली परंपरा है, जो करोड़ो वर्ष पुरातन है। हमारा नववर्ष अंग्रेजी वर्ष से सैंतालीस वर्ष आगे है।

दार्शनिक दृष्टि से हर पल नया है, स्थूल गणना के मुताबिक विक्रम संवत 2070 चैत्र शुक्ल गुरुवार 11 अप्रैल को शुरु हुआ। हमारे इस वर्ष का विशेष ऐतिहासिक व पौराणिक महत्व है। यह अंदर के आलोक को जागृत करता है जो स्वनियंत्रण प्रदान करता है, जिससे विश्वशांति में योगदान मिलता है।

यह अंतश्चर्क्षु उद्घाटित करता है। सुकृत्यों तथा शुभ कर्मो की प्रेरणा देता है। नये फलफूल, नया रस, नई उमंग, नया रंग, नए खाते, नई कक्षाएं, नई किताबें समाज में सब ओर नयापन होता है। नई लहलाती फसलें , नई ऋतु, प्रकृति भी चहुं ओर नया उल्लास बिखेर कर नये वर्ष के आगमन का संदेश देती है। गुड्डी पड़वा, युगादि कई नामों से प्रचलित यह दिन शुभ कामों के लिए अनुकूल और अनबूझ मुहुर्त की तरह इस्तेमाल किया जाता है। शास्त्र का प्रमाण है कि तेल लगाकर स्नान करने के बाद नव वस्त्र धारण कर बच्चों को सजा संवारकर सुबह नीम के पत्ते, इमली भुनी अजवायन, जीरा, हींग, काली मिर्च, सेंधा और खांड मिले चूर्ण का निराहार सेवन कराएं। अपना नववर्ष हमें अवश्य मनाना चाहिए।

न्यासी, श्री विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार मुम्बई

सन्तान को शिक्षित व संस्कारवान बनायें

रामप्रसाद याज्ञिक
कोटा।

आर्य समाज जिला सभा द्वारा वैदिक सत्संग का आयोजन किशोरपुरा स्थित गोविन्द स्थित गोविंद धाम परिसर की यज्ञशाला में किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज प्रधान अर्जुन देव चढडा, आर्यसमाज रेलवे कालोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, आर्यसमाज रामपुरा के पूर्व प्रधान बनवारीलाल सिंहल, आर्यसमाज विज्ञान नगर के पूर्व प्रधान जेएस दुबे, आर्य समाज तलवंडी के प्रधान रघुराज सिंह, हाडोती वेद प्रचार समिति के संस्थापक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, आर्यसमाज तलवण्डी के पुरोहित क्षेत्रपाल आर्य, राजीव आर्य व अन्य ने यज्ञ में अहुतियां डालकर राष्ट्र में सुख, शांति और सदभाव की कामना की।

इस मौके पर प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शिक्षित व संस्कारवान संतान अपने गुणों के आधार पर समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना लेती है अत: अपनी संतान को शिक्षित व संस्कारवान बनायें। हरिदत्त शर्मा ने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों को अपना कुछ समय समाज सेवा में लगाना चाहिए। रामप्रसाद याज्ञिक ने ईश्वर स्तुति का भजन ''सृष्टि रचाने वाले कितना महान है तू'' तथा जे.एस.दुबे ने '' प्रभु प्यारे से जिसका संबंध है उसका हर तरफ आनंद ही आनंद है'' सुनाकर सबको भाव विभोर कर दिया।

महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे दयानंद : अर्जुनदेव

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

आर्य समाज जिला सभा एवं आर्य समाज विज्ञान नगर के संयुक्त तत्वावधान में महिला दिवस के अवसर पर विज्ञान नगर स्थित आर्य समाज सभा भवन पर नित्य योग करने वाली महिलाओं के बीच कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन चढ़डा ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने महिलाओं को समानता प्रदान करने एवं उनके उत्थान के लिए सर्वप्रथम उद्घोष किया। वे महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे, जिसके फलस्वरुप उनके निधन के बाद भारत में सर्वप्रथम जालंधर पंजाब में आर्यसमाज के द्वारा नारी पाठशाला की स्थापना की गयी। चढ़डा ने महिलाओं से आग्रह किया कि अपनी बहुओं को बेटी मानकर व्यवहार करें। इससे घर-परिवार में शांति का माहौल बना रहेगा। कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध महिलाओं को स्वयं जागृत होकर समाज को जागृत करना होगा। वैदिक विद्वान डा. केएल दिवाकर ने महिलाओं को आध्यात्म से जुड़ने की सलाह देते हुए कहा कि समय निकालकर भारतीय वैदिक संस्कृति पर आधारित पुस्तकों का अध्यन करें व परिवार को सुसंस्कृत बनाएं। जेएस दुबे ने ईश्वर स्तुति का भजन ओ३म् तुझमें ओम सबमें ओम् समाया, सबसे कर ली प्रीत जगत में कोई नहीं पराया:....सुनाकर भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर उपस्थित महिलाओं को अतिथियों ने स्मृति चिन्ह भेंट किए। कार्यक्रम संयोजक राकेश चड्ढा ने आभार प्रकट किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम राजेश्वरी देवी, पुष्पानाथ, निहारिका त्रिपाठी, चन्द्रप्रभा, सविता जैन, कृष्णा सागर, इन्दिरा त्रिवेदी, शमसाद सेठ, कमला शर्मा, श्यामा गोयल, गायत्री देव सहित अन्य महिलाएं उपस्थित रहीं।

महान सुधारक थे महर्षि दयानंद

रामप्रसाद याज्ञिक
कोटा।

महर्षि दयानंद सरस्वती एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज सुधार के लिए ही आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में मुम्बई में की। आज पूरा भारत वर्ष ही नहीं, बल्कि विश्व के कई देशों में भी आर्य समाज महर्षि के मिशन को आगे बढ़ा रहा है। उक्त विचार एक संगोष्ठी में आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने व्यक्त किये। यह गोष्ठी आर्य समाज जिला सभा, कोटा एवं संवेदना रिसर्च फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानंद के जन्म दिवस पर आयोजित की गयी। समिति के चेयरमैन एवं स्टेट कॉडिनेटर डॉ. आर साहनी ने कहा कि हमारा उद्देश्य देश को नशे से मुक्त कराना है। रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि महर्षि दयानंद के जीवन से हमें बहुत सारी समरसता की प्रेरणायें मिलती हैं। जिला सभा के पदाधिकारी जेएस दुबे ने ईश्वर स्तुति का भजन सुनाया व उपस्थित सभी आगन्तुओं का आभार व्यक्त किया।

५३वां सामूहिक विवाह आयोजित

विनोद मुनि
मुरादाबाद।

डॉ. एस.एन. एंड सन् सामूहिक विवाह का 53वां आयोजन आर्य समाज स्टेशन रोड पर बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस प्रकार के आयोजन वर्ष में दो बार बसंत पंचमी तथा नवदुर्गों में नियमित रूप से सम्पन्न होते हैं। अब तक इस योजना के अर्न्तगत् 220+5=225 जोड़ों का सामूहिक विवाह कराये जा चुके हैं, इसमें किसी पक्ष का एक पैसा भी व्यय नहीं होता, सभी जोड़ों को एक समान विभिन्न आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा एक समान उपहार भेंट किए गए। इस अवसर पर आर्य पुरोहित पं. दिवाकर शास्त्री, लाल किशोर शास्त्री, सत्यपाल आनन्द, सुभाष मुनि, ओम प्रकाश बाधवा, क्षमपाल आर्य, सत्यवीर , ओमप्रकाश आदि, विनोद मुनि, विनोद कुमार गुप्ता, सन्तोष गुप्ता, देवेन्द्र सिंह दहिया, विनोद अग्रवाल, रमेश सिंह, सूर्य प्रकाश द्विवेदी, मीरा सोती, कमलेश, मिथलेश आर्य, सोमपाल आर्य, हरिश्चन्द्र आर्य, सोनप्रभा, निर्मल आर्य, चन्द किरण, देवकी नन्दन आदि का विशेष सहयोग रहा। विभिन्न संस्थाओं जैसे आर्य समाज स्टेशन रोड, बुद्धि बिहार, महिला आर्य समाज, स्त्री आर्य समाजं, वेद प्रचार मेंडल आदि ने सभी जोड़े को एक समान उपहार भेंट किए गए।

सभा की अध्यक्षता डॉ. अर्जुन वीर वर्मा तथा संचालन डॉ. अभय सोती ने किया।

समारोह सम्पन्न

बड़ोदरा। आर्य समाज, यज्ञ प्रचार समिति और सीनियर सिटिजन क्लब वैकुंठ सोसायटी के संयुक्त उपक्रम में वैकुंठेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में वेद प्रवचन सत्संग समारोह पांच सत्रों में विद्वान वक्ता पं. स्वामी विवेकानंद के प्रवचनों का आयोजन किया गया।

स्वामी जी ने ईश्वर जीव प्रकृति से लेकर पंचमहायज्ञ कर्म-कर्मफल, मोक्ष तक के अनेकों मनुष्य जीवन संबंधित विषयों पर दार्शनिक द्रष्टिकोण से, तार्किक रीति से, प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर अनेक शंकाओं का संतोषकारक समाधान किया गया। सिनीयर सिटीजन क्लब के सदस्यों और अन्य श्रोतागण बहुत प्रभावित हुए।

समाजसेवी भीमसेन साहनी सम्मानित

कोटा (रामप्रसाद याज्ञिक)। आर्य समाज जिला सभा द्वारा समाज सेवा के लिए समर्पित व्यक्तित्व भीमसेन साहनी को किशोरपुरा स्थित गोबिन्दधाम में सम्मानित किया गया। उन्हें समाजसेवी डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता द्वारा शॉल ओढ़ाकर, वैदिक विद्वान तथा आर्य समाज विज्ञान नगर के पूर्व प्रधान डॉ. केएल0 दिवाकर द्वारा गायत्री मंत्र से सुसज्जित रेशमी केसरिया दुपट्टा पहनाकर एवं आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा व उपस्थित आर्य जनों ने स्मृतिचिन्ह प्रदान कर मन्त्रोचारण के साथ सम्मानित किया।

श्री चढ्डा ने कहा कि श्री साहनी एक उदारवादी भामाशाह समाजसेवी, धर्मपरायण एवं मिलनसार व्यक्ति हैं जो आर्य समाज व अन्य संस्थाओं के माध्यम से परोपकार के कार्य करते रहते हैं। श्री साहनी ने कहा कि आर्य समाज द्वारा सम्मानित होकर वे अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। श्री साहनी के पुराने मित्र डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता ने साहनी द्वारा किये गये सेवा समिति कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति के जे.एस.दुबे, आर्य समाज तलवण्डी के पूर्व प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, आर्य समाज रावतभाटा के नरदेव आर्य, आर्य पुरोहित श्योराज एवं राजीव आर्य उपस्थित रहे।

रतनलाल अरोड़ा को मातृ शोक

नरपति सिंह
रुद्रपुर।

उपप्रतिनिधिसभा उधम सिंह नगर की आपातकालीन शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा में समाजसेवी डा. रतनलाल अरोड़ा की माता जी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

वक्ताओं ने दिवंगत रामप्यारी पत्नी स्व. लाला देशबंधु एवं चिकित्सक डॉ. रतनलाल अरोड़ा की माता की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गयी। श्रद्धांजलि सभा में सुरेन्द्र शास्त्री , कृष्ण कुमार यादव, जयप्रकाश, शिवजी मौर्य, अमरनाथ, नत्थूलाल आर्य, प्रमोद आर्य, सोहनलाल आर्य आदि शामिल रहे।

विश्व कल्याण हेतु किया यजुर्वेद परायण यज्ञ

ईश्वर दयाल माथुर
जयपुर।

विश्वशान्ति एवं कल्याणार्थ यर्जुवेद परायण यज्ञ का आयोजन कराया।

वैदिक विधि विधान एवं कर्मकाण्ड के प्रति आकर्षण व श्रद्धा, अब पौराणिक जगत एवं सामाजिक संगठनों को भी आकृष्ट करने लगे हैं। इसका ताजा उदाहरण मानसरोवर कालोनी के 'डे केयर सेंटर' में वरिष्ठ जनो की संस्था सीनियर सिटिजन फोरम द्वारा आहूत यजुर्वेद पारायण यज्ञ है। आर्य समाज के संयोजन में विश्व कल्याण हेतु यर्जुवेद पारायण यज्ञ किया गया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने यज्ञ को श्रेष्ठतम् कर्म की संज्ञा देते हुए कहा कि संगतिकरण, देवपूजा तथा दान से यज्ञ शब्द का निर्माण होता है। कार्यक्रम के संयोजक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल सिंह ने ऋषि के त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला।

स्वर माधुरी चारों दिन यादराम, जवाहर लाल, वधवा मेहरा परिवार, सुधा मित्तल तथा सुनील अरोड़ा ने मधुर भजन प्रस्तुत कर, भक्ति रस का संचार किया।

महर्षि जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन आर्यगण- केसरी

महर्षि का उद्देश्य था मानव जाति का उद्धार करना : दिवाकर

अर्जुनदेव चड्ढा
कोटा (राजस्थान)।

आर्य समाज जिला सभा कोटा एवं आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानंद सरस्वती का १८९ वां जन्मोत्सव विज्ञान नगर स्थित राजीव प्लाजा पर श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ आर्यसमाज के विद्वान पं. बिरधीचन्द शास्त्री के पौरोहित्य में देवयज्ञ के साथ किया। जिसमें मुख्य यजमान डा. वेदप्रकाश गुप्ता थे। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डा. केएल दिवाकर ने कहा कि महर्षि दयानंद के जीवन का मुख्य उद्देश्य दुख दर्द से संतप्त मानव जाति का उद्धार करना था, जिसे उन्होंने जीवन की आहुति देकर भी पूरा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि गुजरात के टंकारा में जन्मे इस महापुरुष ने १४ वर्ष की आयु में ही अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए घर छोड़ दिया था। गुरु की तलाश में स्वामी विरजानंद से सच्ची शिक्षा प्राप्त की और वेदों के प्रचार के लिए सर्वस्व जीवन का समर्पण कर दिया। रामप्रसाद यज्ञिक ने कहा कि भटकती मानव जाति को पतन की पराकाष्ठा के उस वक्त में बचाने का काम स्वामी जी ने जीवनदान देकर किया। बिरधीचन्द शास्त्री ने कहा कि जिस देश में नारी जाति का सम्मान होता है, वह देश की उन्नति करता है। ऋषि दयानंद ने हमें भेदभाव और छूआछूत को भुलाने का संदेश दिया है। पार्षद ईश्वर गंभीर ने कहा कि महर्षि दयानंद ने अंधविश्वासों में जकड़े समाज को मुक्त होने का संदेश सबसे पहले दिया था। जेएस दूबे ने महर्षि दयानंद के जीवन पर आधारित एक से बढ़कर एक भजनों की सुमधुर प्रस्तुति दी। उन्होंने 'दुनिया वालो देव दयानंद दीप जलाने आया था, भूल चुके थे राहें अपनी वह दिखलाने आया था, पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल किजीए सहित कई भजनों की प्रस्तुति से श्रद्धा का उल्लास घोला। इस अवसर पर आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान सुमेश गांधी, राकेश चड्ढा, श्रीचन्द गुप्ता, क्षेत्रपाल आर्य, अरविन्द पांडेय, शिवराज विशिष्ठ, कर्णसिंह, प्रभुसिंह कुशवाह, बनवारी लाल सिंघल, हरिदत्त शर्मा, चन्द्रमोहन कुशवाह एड, रामदेव शर्मा, सरदार प्रीतपाल सिंह कोहली समेत अनेक लोग शामिल रहे।

दयानन्द जयंती व बोधोत्सव का आयोजन

सतीश आर्य
अफजलगढ़।

आर्यसमाज मंदिर में ऋषिबोध सप्ताह, महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म दिवस व बोधोत्सव का आयोजन यज्ञ, भजन व प्रवचन के माध्यम से हर्षोल्लास पूर्वक किया गया।

इस अवसर पर सप्ताह से वेद पाठ करते आ रहे यज्ञ के ब्रह्मा डा. अशोक रस्तौगी ने महर्षि दयानंद के जन्म दिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा संवत १८८१ कि फाल्गुन वदी दशमी को दयानंद जी अवतरित हुए थे। वे ऐसे स्कंद व ऋषि थे जो अंधकार के भी पार देख लेते थे अर्थात दुख दुर्गुण व विषय वासनाओं से मुक्ति पाकर आनंदमय, सदगुणी व संकल्पवान बन जाता है। उन्होंने विश्व के कल्याण, उत्थान व सुधार का आधार बेदों को बनाया। ऋषिराज ने कहा था कि ईश्वर, जीव और वेद केवल आस्था व श्रद्धा के विषय नही हैं अपितु तर्क के भी विषय हैं। 'वेदों की ओर लौटो' इस उदघोष के पीछे उनका मन्तव्य था कि भारत के लोग वेद व ज्ञान को अपनी धरोहर समझकर उसका उपयोग अंधविश्वास, पाखंड, अविद्या व कुरीतियों को समाप्त कर एक आदर्श समाज का नव निर्माण कर सके।

उन्होंने कहा कि ऋषि जी को बोध हुआ था कि पाषाण प्रतिमा ईश्वर नहीं हो सकती, ईश्वर तो कोई ओर है, जिसकी खोज करनी पड़ेगी। उसी रात में उनके मन में क्रांति का भाव उत्पन्न हुआ। आयोजन में चौधरी चरण सिंह, सुरेशपाल आर्य, अरुण विश्नोई, पूरन सिंह ध्यानी, ज्ञान सिंह, महीपाल सिंह, शुभम विश्नोई, रिशव, शुभम तोमर, अवधेश आर्य, जयवती देवी आदि विशेष रुप से उपस्थित रहे।

आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी के लिए प्रसारकों की, जो गांव-गांव, नगर-नगर घूमकर सदस्यता का विस्तार कर सकें। वेतन पाँच से दस हजार रुपये प्रतिमाह। आवागमन, भोजन व आवास आदि सम्बन्धी वास्तविक व्यय अलग से देय होंगे। आर्य विचारधारा के उत्साही व कर्मठ महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें-

डॉ. अशोक कुमार आर्य
सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
मो.- 09412139333

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर उ.प्र. (भारत) -२४४२२१ से प्रकाशित एवम् प्रसारित। फोन ; 05922-262033, 9412139333
फैक्स: 262665

डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com